मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अनुचित स्वभाव

"वर्तमान समय के बिगड़े हुए हालात को देखकर बहुत से लोगों का स्वभाव ये हो गया है कि वो हर उस व्यक्ति के जो इन्क़िलाब का नारा लगाये या किसी बड़ी ताक़त को चैलेन्ज करे, अक़ीदे के हर बिगाड़ और काम व नज़र की हर बुराई को माफ़ कर देते हैं। और अक़ीदे के मसले से बिल्कुल नज़र फेर लेते हैं, बल्कि उल्टे उन लोगों की निंदा करते हैं और कभी बुरी ताक़तों से साठ—गांठ करने का आरोप भी लगाते हैं जो इस मौक़े पर अक़ीदे की बहस को उठाये और उस शख़्स के अक़ीदे के बारे में कोई सवाल करे। ये सोच सही दीनी मिज़ाज और नबवी तरीक़े से कोई संबंध नहीं रखती।"

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0

(दस्तूरे हयात : 22)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

MAY 14 **₹ 10/-**

यूरोप की उन्नति का आरम्भ

ज्ञान व सभ्यता और व्यवस्था में मुसलमानों की इन उन्नतियों को देखकर उनकी साथी क़ौमों पर ऐसा असर चढ़ा जिनमें ख़ासतौर पर पश्चिमी देश थे जो स्पेन से मिले हुए थे। उसी के असर यूरोप में शिक्षा आम हुई। जिनके लिये अस्ल साधन मुसलमानों की खोज थी। फिर क़ौमों के इतिहास में ये नियम कार्य करता है कि हर उन्नति को पतन का सामना करना पड़ता है। अतः इन उन्नति प्राप्त मुस्लिम देशों में मेहनत से छुटकारा व ग़फ़लत का आरम्भ हुआ। इसी प्रकार फिर कई सदियों के हालात ने शागिर्दों को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाया और कितनी खोजे व उपाय और सांस्कृतिक सोच का एहतिमाम मुसलमान उन्नति प्राप्त देशों में उन्नति की राह में पश्चिम के नौख़ेज़ देशों को लगा दिया। इसलिये पश्चिमी देशों के लिये बाद की सदियां ज्ञान व सभ्यता में उन्नति की सदियां बन गयीं और इसी के नतीजे में ये सदियां मुसलमानों की कमहिम्मती और अशिक्षा की सदियां बनीं और इसी के परिणाम में इस समय पश्चिमी देशों की ज्ञान की व सभ्यता की उन्नति अपने चरम पर है। अब आसार ये बता रहे हैं कि यूरोप को इस पसमान्दगी से निकल कर जो मुसलामनों के उरूज की सदियों में थी जिससने निकलकर अपने उरूज के कमाल तक पहुंचने में लगभग चार सदिया ख़र्च हो गयीं। वर्तमान सदी उनके चरम की सदी कही जा सकती है। लेकिन इस सदी के अन्त में दूसरी क़ौमों के उन्नति की राह पर आने का सिलसिला शुरू हो गया है। और बेदारी का ख़ासा एहसास हो जिससे पश्चिम के उरूज को सामना करना है और ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ बज़ाहिर अब उनके पतन का भी ज़माना शुरू हो गया है। और उसी के साथ साथ मुसलमान देशों ने अपनी चार दशकों की ग़फ़लत का एहसास और अपने उत्थान की तमन्ना बढ़ रही है।

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:५ मई २०१४ ई० वर्ष:६

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्ररी- दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

आत्महत्या का बढ़ता हुआ रूझान.....२
बिलाल अब्दुल हयि नदवी

लोकतन्त्र – अपने वास्तविक रूप में.....३
मौलाना सैय्यद मुहम्म राबे हसनी नदवी

भारतीय लोकतन्त्र – सफलता व असफलता के... ५
मौलाना सैय्यद मुहम्म वाज़ेह हसनी नदवी

कामिल इस्लाम मुकम्मल सुपुर्दगी.....७
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

मुसलमानो को समस्याओं का सामना क्यों?.....९
मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी

इस्लामी अक़ीदा.....११
बिलाल अब्दुल हयि नदवी

चीज़ों को पाक करने के शरई तरीक़े.....१२
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लाम और लोकतन्त्र.....१४
मौलाना अतहर शम्सी मज़ाहिरी

अनमोल वचन.....१६
अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

यूरोपीय औरतें इस्लाम क्यों कुबूल कर रही है?...१८

भारतीय मुसलमान और देश की राजनीति.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

आज़ाद मुसलमान?.....२०
अबुल अब्बास ख़ाँ

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

सम्पादकीय

आत्महत्या का बढ़ता हुआ रूझान

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

जीवन की दौड़ में आज हर व्यक्ति एक अविश्वास की स्थिति के साथ आगे बढ़ता चला जा रहा है। स्वयं वो नहीं जानता कि उसकी मन्ज़िल क्या है? वर्तमान समय की भौतिकवादी उन्नति और चमक–दमक ने हर व्यक्ति को चकाचौंध कर दिया है। हर व्यक्ति ये चाहता है कि वो दूसरों से आगे बढ़ जाये और अपनी क्षमतानुसार मेहनत कर लेने के बाद यदि किसी को लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तो उसको ऐसी मायूसी का सामना करना पड़ता है कि आत्महत्या तक कि नौबत आ जाती है। पूरे देश में आत्महत्या का बढ़ता हुआ रूझान इस मायूसी और स्वयं को भुला देने की दस्तक दे रहा है जो वास्तव में अपने रब को भूल जाने का नतीजा है।

मानव ने अपने आप को इस दुनिया के ऐश्वर्य तक संकुचित कर लिया है। वो भूल जाता है कि उसको उसके पैदा करने वाले ने क्यों पैदा किया? उसके आगे कैसी–कैसी मंज़िलें हैं? और कहाँ तक उसका उरूज है? वो यदि अपनी वास्तविकता को पहचान ले तो वो कहाँ नहीं पहुंच सकता? अल्लाह ने उसके अन्दर कैसी–कैसी योग्यताएं रखीं हैं, जो उसे दूसरे सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती हैं। वो जब अपनी विशेषताओं में आगे बढ़ता है तो फ़रिश्तों के दर्जे में पहुंच जाता है। फ़रिश्ते उस पर रश्क करते हैं? फ़रिश्तो के अन्दर ठोकर खाने की योग्यता ही नहीं, इन्सान ठोकर खा सकता है, लेकिन वो अपने आप को संभालना जानता है। उसके अन्दर सब्र व बर्दाश्त की ऐसी ताक़त है कि उसके परिणाम में वो आसमान की बुलन्दियों तक पहुंच जाता है। बड़ी से बड़ी समस्याओं का हल निकालना उसके लिये खेल हो जाता है और दुनिया की उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाना उसके लिये मामूली बात बन जाती है।

ये इन्सान व हैवान के बीच का अन्तर है। हैवान के सामने सिवाय खाने–पीने और आनन्द की प्राप्ति के और कोई दुनिया नहीं। इन्सान अपने अन्दर दिल की एक दुनिया रखता है। उसके एहसास व उसकी भावनांए, उसके अन्दर का दर्द व मुहब्बत उसके लिये बड़ी पूंजी है। वो खुद भूखा रहकर जब दूसरों को खिलाता है तो उसकी आत्मा को जो शांति प्राप्त होती है या जब वो दूसरों के काम आता है तो उसके दिल को सुकून मिलता है और कई बार दूसरों को फ़ायदा पहुंचाकर जो मज़ा उसको मिलता है वो अपने हज़ार फ़ायदे पर भी उसको हासिल नहीं होता। लेकिन उसके अन्दर इन्सान को जगाने की ज़रूरत है, जो मरा तो नहीं है लेकिन सो रहा है। हैवानियत ने उसकी जगह ले ली है। जिसके परिणाम में उसका जीवन कुवें के मेढ़क की भांति होकर रह गया है। वो दुनिया के ऐश व आराम को और जिस्म की राहत व संतुष्टि ही को सब कुछ समझने लगता है और जब इसमें उसको कोई कमी नज़र आने लगती है तो वो दुनिया को बेकार समझकर अपनी ज़िन्दगी को दांव पर लगा देता है और आत्महत पर आमादा हो जाता है।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने हक़ीक़त समझाई है और इन्सान के अन्दर की इन्सानियत को जगाया है। उसको उसकी वास्तविकता से अवगत कराया और उसका मूल्य उसको बताया है। उसके नज़दीक इन्सान की अस्ल क़ीमत उसके व्यवहार व चरित्र की है। उसकी श्रेष्ठता से मनुष्य पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है और वो अस्ली जौहर है जिसको हासिल करने के लिये एक दूसरे से आगे बढ़ने की ज़रूरत है। एक जगह फ़रमाया गया कि दीन के मामले में उस शख़्स पर निगाह रखो जो तुमसे आगे है ताकि तुम्हारे अन्दर आगे बढ़ने का जज़्बा हो और दुनिया के बारे में उस शख़्स को देखो जो तुम से कम नज़र आ रहा है। इससे तुम्हारे अन्दर शुक्र के भाव पैदा होंगे और तुम्हें जीवन के आनन्द की प्राप्ति होगी।

अफ़सोस की बात है कि आज मुसलमान भी दुनिया की इस दौड़ को सब कुछ समझ कर खुद को भूल चुके हैं। बजाय इसके कि वो सिसकती हुई इन्सानियत को ताक़त देते, उसको उसकी हैसियत बताते, और उसको ख़ुदा की पहचान कराते, तो वो स्वयं ख़ुदा को भूल चुके हैं। आज दोबारा उसी नबवी ज़माने को याद करने की ज़रूरत है जिसने इन्सानों को बराबरी का वो हक़ दिया कि दुनिया उसको कभी न भुला सकेगी और जिसके नतीजे में कमज़ोर औरत सैंकड़ों मील से आवाज़ लगाती है तो उस समय का बादशाह भी उसकी सेवा के लिये उपस्थित हो जातो है। ये मिसाल है। ख़ैर वो मिसाल हैं सैक्ंडो मील दूर लगातार मुसलमानों की आबादी बढ़ रही है। काश दोबारा मुसलमानों में दीनी ज़िन्दगी पैदा हो जाये ताकि इन्सान को फिर से जीने का मज़ा आने लगे और ज़िन्दगी से मायूसी के जो बादल दुनिया पर मंडला रहे हैं वो छिप जाएं और इन्सानों को इन्सिानियत का मज़ा आने लगे।

लोकतन्त्र
अपने वास्तविक रूप में

मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

लोकतन्त्र एक बहुत ही ख़ूबसूरत, ख़ुश कर देने वाला और सुकून बख़्शने वाला शब्द है। दिमाग पर अपने आप इसका जादू चल जाता है और दिल इसकी अहमियत को कुबूल कर लेता है। नतीजा ये होता है कि जब भी किसी देश या ज़मीन के किसी हिस्से से लोकतन्त्र हटा तो बिना देर किये हुए उसको वापिस लाने और नये सिरे से इसको लागू करने की कोशिश शुरू हो जाती हैं।

"लोकतन्त्र" को इस प्रकार के इन्सानी ख़तरों का आधार और प्राथमिकता समझते हैं। इस व्यवस्था से मुहब्बत लोगों के दिलो में इस हद तक रच बस गयी कि मनोस्थिति व जनता के रूझान व विचार से थोड़ा सा परिचित व्यक्ति इस केवल नाम के लोकतन्त्र के विरुद्ध एक शब्द भी बोलने की हिम्मत नहीं कर सकता है। ख़िलाफ़ बोलना तो दूर की बात? उसके महत्व व आवश्यकता को कम समझना ही "लोकतन्त्र" के दरबार में बहुत बड़ा गुनाह समझा जाता है। हर व्यक्ति "गणतन्त्र" की तारीफ़ में उसकी शान बढ़ा रहा है और उसके नाम के क़सीदे पढ़ रहा है चाहे वो लोकतान्त्रिक व्यवस्था के प्रशंसको का वर्ग हो या कट्टर धार्मिक व्यक्तियों का वर्ग। वो दोनों बराबर उसका कलमा पढ़ते नज़र आते हैं। लेकिन क्या वास्तव में "लोकतन्त्र" मनुष्य का आधारभूत मसला और प्राथमिकता है?ये सवाल फिर भी जवाब की प्रतीक्षा मे है?

वर्तमान मनुष्य ने विभिन्न देशों और दुनिया की बहुत सी जगहों में "डेमोक्रेसी" का ख़ूब अनुभव किया। लोकतान्त्रिक रंग–ढंग में व लोकतान्त्रिक रूप से चलने वाली जीवन व्यवस्था को अच्छी तरह परखा लेकिन शांति व अमन व इत्मिनान की दौलत मिलना अभी तक बाक़ी है। हालांकि लोकतान्त्रिक व्यवस्था का उद्देश्य ही वास्तव में शांति व अमन का वातावरण स्थापित करना है। लेकिन हुआ बिलकुल इसके विपरीत है। कितने ऐसे देश और शासन हैं जहां लोकतन्त्र के झन्डे तले और गणतन्त्र के नाम पर ही ज़ुल्म व अत्याचार और गुनाहों का बाज़ार गर्म है। इसका कारण ये है कि आज जिस लोकतन्त्र का कलिमा पढ़ा जा रहा है, जनता के बीच जिस लोकतन्त्र को दाद मिल रही है, वो ऐसे लोगों के द्वारा अस्तित्व में आता है जो विभिन्न नागरिकों के बीच शासन की बाग़डोर संभालने के लिये चुने जाते हैं और फिर अपनी इच्छा व अपने दृष्टिकोण के अनुसार कार्य आरम्भ हो जाता है और यही लोग बाद में देश के मार्गदर्शक और शासक का ख़िताब भी पाते हैं। शैक्षिक, वैचारिक, चिन्तनीय और व्यवहारिक स्तर और निजी इच्छाओं और रूझानों से नज़र हटाकर मार्गदर्शन और सत्ता की कुर्सी उन्हीं के लिये सजा दी जाती है, केवल इसलिये कि किसी तरह ये साबित हो गया कि उन लोगों ने अपने विरोधियों की तुलना में चुनाव में अधिक वोट प्राप्त किये। हालांकि वोट देने वालों के अनुपात से या देश वासियों के अनुपात से वोटों की गिनती हो तो दस प्रतिशत बल्कि पांच प्रतिशत वोट भी उनके हक़ में नहीं आते। लेकिन केवल अपने विरोधी की तुलना में अधिक वोट प्राप्त करने के कारण सम्पूर्ण देशवासियों का प्रतिनिधी और शासक उसी को समझा जाता है और फिर शासन भी कैसा? अपनी अक़्ल व फ़िक्र और अपनी राय व ख़्याल के अनुसार हुकूमत के सारे काम किये जाते हैं और ऊपर से लोकतन्त्र का ग़िलाफ़ उढ़ा दिया जाता है।

इस केवल नाम के लोकतन्त्र से देश का केवल एक गिरोह लाभान्वित होता है। जिसकी बुनियाद पर नित नयी दख़लअन्दाज़ियां होती रहती हैं। उनको किसी चीज़ का डर है तो केवल इस बात का कि आम राय उनके ख़िलाफ़ न होने पाये और विरोध का आम वातावरण न बनने पाये।

इस समय आम तौर पर दुनिया के अत्याचार व शोषण के मिज़ाज के बल पर ही लोकतन्त्र की गाड़ी चल रही है

और मज़े की बात ये है कि हर जगह इस लोकतन्त्र के ज़ाहिरी हिस्से पर समानता का ख़ूबसूरत ग़िलाफ़ चढ़ा हुआ है। परिणामस्वरूप ग़रीबों और कमज़ोरों की पुरानी हालत में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं आता और नियमानुसार ग़रीब ग़रीब ही रहता है। आख़िर बदचलनी व अव्यवस्था के क्या कारण हैं? ग़ौर करने से पता चलेगा कि इन्सानी नफ़्स ने तो पहले बराबरी व समानता व एक दूसरे के ग़म बांटने के भाव अपने अन्दर पैदा नहीं किये और न तो इन्सानों के साथ इन्सानों का मामला और सुलूक किया। स्वार्थ व शोषण के शौक़ लाभ परस्ती के कीटाणु मारे नहीं गये और लोकतन्त्र की बाग़ संभाल ली गयी।

याद रखिये! जब तक एक दूसरे का ग़म बांटने की रूह पैदा नहीं की जायेगी, उस समय तक ये फ़रेब की शक्लें और अवास्तविक रूप कोई फ़ायदा नहीं दे सकतीं।

लोकतान्त्रिक देशों में जो लोग शासक वर्ग से ज़्यादा संबंध नहीं रखते हैं उनको तो और भी ज़्यादा ज़ुल्म व मुसीबतों का शिकार बनाया जाता है। उनके और शासक वर्ग के बीच संबंधों की शक्ल बिल्कुल उसी तरह हो जाती है जिस तरह यतीम और यतीम की परवरिश करने वाले के संबंध होते हैं। अगर यतीम की परवरिश करने वाला खुशहाल है तो यतीम का माल थोड़ा ही खायेगा और अगर बदक़िस्मती से वो ग़रीब है तो यतीम के माल की ख़ैर नहीं।

वर्तमान लोकतन्त्र की असफलता आज सभी लोगों के सामने ज़ाहिर हो चुकी है। अब लोकतन्त्र केवल वर्तमान दौर का एक फ़ैशन बन गया है। उसकी अलग अलग शक्लें दुनिया के अलग अलग हिस्सों में पायी जाती हैं। जिसके पीछे क़ौम को धोखा देने और उन पर शासन करने और अपना वर्चस्व स्थापित करने का उद्देश्य कार्यरत होता है।

इक़बाल ने बहुत पहले कहा था और अब बरसहा बरस के तर्जुबे ने भी हक़ीक़त को आइने की तरह साबित कर दिया है।

देव इस्तबदाद जम्हूरी क़बा में पाये कोब
तू समझता है कि आज़ादी की है नीलम परी

तौहीद वेदों में

वेदों में अल्लाह के एक ही होने का साफ़ बयान है। एक खुदा की बहुत सारी विशेषताएं बयान करने के बाद वेद कहता है: "वो एक अकेली ताक़त है, वो बेमिसाल है, बस एक, हर जगह रहने वाला, देव एक ही है।" (अथर्ववेद) वेदों में है कि: "जो एक और इकलौता मालिक है, वो दाता होने की वजह से इनसानों को धन दौलत से नवाज़ता है, वो बिना किसी साझी और साथी के सब दुनिया का मालिक है।" (ऋगवेद) ऋगवेद में दूसरी जगह आता है कि: "एक ईश्वर शारीरिक व आत्मिक ताक़ते अता करने वाला है, उसी की इबादत सभी देवता करते हैं, उस एक ईश्वर की खुशी हमेशा की ज़िन्दगी अता करने वाली और मौत का ख़ात्मा कर देने वाली है, उस ईश्वर को छोड़कर तुम किस देवता की पूजा कर रहे हो।" (ऋगवेद) यजुर्वेद में आत है कि: "विचारों से परे एवं अतुलनीय सृष्टा सदा से एक ही है।" (यजुर्वेद) इसी वेद में दूसरी जगह आता है कि: "जो आदमी माद्दो से बनी हुई मिटने वाली चीज़ यानि देवी देवताओं या इन्सान इत्यादि की पूजा करता है वो अज्ञानता के घटाटोप अंधेरों में प्रवेश करता है।" (ऋगवेद) दूसरी जगह है: "उस खुदा की कोई फ़ोटो या मूर्ति नही है।" (यजुर्वेद) "जिसकी व्याख्या कलामों के द्वारा नहीं की जा सकती है बल्कि जिसकी ताक़त से कलाम पैदा होता है, तुम उसी को खुदा जानो, न कलामों की व्याख्या किये गये खुदा को, जिनकी लोग पूजा करते हैं।" (कीन उपनिषद) दूसरी जगह लिखा है कि, "जिसको कोई आंख से नहीं देख सकता, बल्कि जिससे आंखो को देखने की ताक़त मिलती है, तुम उसी को खुदा मानो, न कि उसको कि जिसको आंखे देखती हैं और लोग उसकी पूजा करते हैं।" (कीन उपनिषद) "खुदा वो है जिसके ख़ौफ़ से आग और सूरज में तपिश पैदा होती है और मौत के देवता अपने अपने काम करते हैं।" (खण्ड उपनिषद) "खुदा वो है जिसके खौफ़ से हवा चलती है और उसी के डर से सूरज निकलता है, उसी के डर से आग में तपिश पैदा होती है और उसी के डर से मौत के देवता अपने काम पर लगे हुए हैं।" (शिवातेश्वर उपनिषद) "वो कौन है जिसकी ताक़त से जिस्म व जान, कान, आंख और सभी अंग काम करते हैं और वो कौन है जो मन का मन, जान की जान, कलाम का कलाम, कान का कान और आंख की आंख है? वो वही एक है जिसको जानकर अक़्लमन्द लोग हमेशा हमेशा के लिये इस दुनिया से नजात पाते हैं।" (कीन उपनिषद) "यक़ीनन खुदा की रोशन ज़ात कामिल व अकमल हाथ पैर वग़ैरह सभी इन्सानी अंगो से दूर, इस दुनिया में भी और इसके अलावा भी, जन्म इत्यादि से परे, इन्सानों जैसे जिस्म व जान व मन से भी दूर होने के कारण हर प्रकार से बेऐब व पाक है। इसलिये इन्सान की न मरने वाली आत्मा से इसकी समानता नहीं की जा सकती है, वो खुदा तो इससे बहुत महान है।" (मन्डक उपनिशद) इन्सान की पैदाइश के बारे में यजुर्वेद में सवाल व जवाब है कि "किसने तुमको पैदा किया हैं? एक खुदा ने तुमको पैदा किया। उसने तुमको क्यों पैदा किया? उसने तुमको अपने आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने के लिये पैदा किया।" (यजुर्वेद).

मौलाना मुसव्विर आलम नदवी

भारतीय लोकतन्त्र

सफलता व असफलता के आइने में

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

भारत ने सन् 47ई0 में बर्तानिया से स्वतन्त्रा प्राप्त की और 26 जनवरी 50 में लोकतान्त्रिक संविधान की घोषण की। संविधान निर्माण में देश की सभ्यता, संस्कृति, विभिन्न धर्मों, भाषाओं व राजनीति को ध्यान में रखा गया था और संविधान बनाने वालों ने संविधान में ऐसे स्वतन्त्र विकासशील देश का विचार प्रस्तुत किया जिसमें सभी नागरिकों के अधिकार समान हों। उन्हें अपना जीवन स्तर श्रेष्ठ करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो। न्याय व इन्साफ़ का वातावरण हो और रंग, नस्ल व आस्था के आधार पर किसी को वंचित नहीं रखा जायेगा। शिक्षा व रोज़गार के अवसर सबको प्राप्त हों। आर्थिक विषमता दूर हो और विभिन्न वर्गों के बीच अन्तर समाप्त हो। इसके लिये अल्पसंख्यको व दबे–कुचले वर्ग के लिये विशेष छूट रखी गयीं। विभिन्न भाषाओं व सभ्यताओं की उन्नति के लिये नियम बनाये गये।

इसमें कोई शक नहीं कि भारत का संविधान भारत जैसे देश के लिये एक उदाहरणीय संविधान है और इसी कारण से भारत ने अपनी 67 साल के शासनकाल में बहुत से उद्देश्यों की प्राप्ति में नुमायां सफलता प्राप्त की है। कारोबार जो देश की अर्थव्यवस्था के सुधार में अहम भूमिका निभाते हैं.....बढ़ावा मिला और पैदावार बढ़ायी गयी और कृषि की ओर भी भरपूर ध्यान दिया गया। औधोगिक क्षेत्र में देश ने बड़ी उन्नति की जिससे रोज़गार उपलब्ध करने में मदद मिली। अन्न की पैदावार के अनुपात में बढ़ोत्तरी हुई और किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। इसके अतिरिक्त भण्डारण की रोकथाम में ग़रीब किसानों, दबे कुचले वर्गों में ज़मीन का बंटवारा, मिल्कियत में चकबन्दी और बहुत से उधोगों को राष्ट्रीय सम्पत्ति के अन्तर्गत लेने से देश को निचले स्तर से ऊपर उठाने में मदद मिली। शिक्षा के अवसरों में बढ़ोत्तरी हुई। जिससे केवल शहरों ही नहीं अपितु दूर दराज़ के देहातों, क़स्बों में शिक्षा को आम करने, अज्ञानता को दूर करने में सफलता प्राप्त हुइ। देहाती क्षेत्रों में प्रकाश की व्यवस्था के लिये बिजली उपलब्ध करायी गयी। एटमी क्षेत्रों में बहुत सफल अनुभव किये गये और देश के निर्माण व विकास के लिये उससे काम लिया जाने लगा। हवाई खोजों में भी देश को सफलता प्राप्त हुई और विशेषज्ञों की एक बड़ी संख्यां एशिया व अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों के औधोगिक क्षेत्र में सहयोग कर रही है।

आरम्भिक दशकों में उन्नति को देखकर बहुत से विशलेषक ये भविष्यवाणी करने लगे थे कि निकट भविष्य में भारत अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी में एक बावक़ार हैसियत का हामिल होगा और एशिया व अफ़्रीक़ा के विभिन्न सभ्यता व संस्कृति, विभिन्न रंग व नस्ल वाले देशों के उन्नति व निर्माण और उनकी समस्याओं का समाधान करने और वहां की अज्ञानता व दरिद्रता पर नियन्त्रण पाने में भारत उनके लिये आडियल साबित होगा।

एक ऐसा समय भी आया कि बहुत से राजनीतिक विशलेषकों ने इसको मिनी सुपर पावर का ख़िताब दे दिया और भविष्य का सुपर पावर बनने में कम लोगों को शक था लेकिन आख़िरी के दशकों के बहुत से ग़लत निर्णयों और पॉलिसियों के परिणाम में ये भविष्यवाणियां गलत सिद्ध होने लगीं। विशेषकर पिछले कुछ सालों से आर्थिक खस्ताहाली, राजनीतिक उठापटक, आन्तिरक फूट व बिखराव, राष्ट्रीय एकता की कमी ने देश की साख को हिला कर रख दिया है। बढ़ते हुए साम्प्रदायिकता, अलगाव का रूझान और आपसी तनाव का वातावरण पूरे देश में पैदा हो गया और छोटे छोटे जातीय ढ़ाचों की स्थापना का विचार बढ़ले लगा। अब सबसे ज़्यादा गंभीर समस्या ये है कि इस तंगनज़र रूझान में ताक़त का इस्तेमाल बढ़ रहा है और पूरे देश के विभिन्न राज्यों और विभिन्न क्षेत्रों में अलगाव वादी आन्दोलन उठ खड़े हुए हैं और छोटे–छोटे संगठन भी सर उठाने लगे हैं। धार्मिक व नस्ली साम्प्रदायिकता देश का मिज़ाज बनता जा रहा है और कितने ही आतंकी संगठनों की स्थापना हो चुकी है जो हत्या व लूटपाट में लगे हुए हैं।

ये स्थिति यदि किसी एक क्षेत्र, किसी एक वर्ग के साथ होती तो इस पर नियन्त्रण पाना संभव था। लेकिन

यहां ये समस्या पूरे देश में किसी सैलाब की तरह चल पडी है और हालत ये है कि देश की अर्थव्यवस्था ख़स्ताहाल हो रही है जिसके कारण से देश के सत्ताधारियों को बहुत बार दौलत में कमी मुद्रा स्फीति को दोहराना पड़ा है। इस समय देश का पूरा वजूद बाहरी क़र्ज़ों और उस पर लगने वाले ब्याज से बोझिल हो रहा है और देश अपने अन्दर उसे अदा करने की क्षमता नहीं कर पर रहा है। वास्तविकता ये है कि भारत की विभिन्न क्षेत्रों की असफलता ने भारत के लोकतन्त्र को ख़तरे में डाल दिया है। यहां तक कि देश के शासको को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, अहिंसा, व्यक्ति विशेष की स्वतन्त्रता जैसे मूल्यों की चिन्ता हो गयी है। देश में ऐसी चरमपन्थी आन्दोलनों को बढ़ावा मिल रहा है जिसका वास्तविक उद्देश्य केवल एक सभ्यता विशेष की बढ़ोत्तरी व एकमात्र संस्कृति का वर्चस्व, एक क़ानून और एक जाति का अधिपत्य है और उसको वो लोगो से मनवा लेना चाहते हैं और अपनी पूरी ताक़त व क्षमता, सारा धन व दौलत और सारे साधनों को इसकी प्राप्ति के लिये क़ुर्बान कर देना चाहते हैं।

कहा जाता है कि साम्प्रदायिकता साम्प्रदायिकता को जन्म देती है। बहुत ही गंभीर समस्या ये है कि देश के बहुसंख्यकों में साम्प्रदायिकता का रूझान पैदा हो गया है और इसके प्रभाव उस वर्ग पर पड़ गये हैं जो सत्ता पर क़ाबिज़ है और मीडिया पर जिसका नियन्त्रण है। न्याय प्रिय शासक में उससे पंजा लड़ाने की क्षमता नहीं है। इस बेजा पक्षपात ने साम्प्रदायिकता को जन्म दे दिया है इसलिये कि जब अल्पसंख्यको और दबे कुचले वर्ग के अन्दर वंचित होने का भाव, पीड़ित होने और शासन की ओर से नज़रअन्दाज़ किये जाने का भाव पैदा हो गया तो इस वंचित होने के भाव को आधार मानकर एक के बाद दूसरे मौसमी नेता उठ खड़े हुए और इसी कमतर होने के एहसास से फ़ायदा उठाते हुए छोटे–छोटे दल स्थायी शासन की स्थापना का ख़ाक़ा प्रस्तुत करने लगे। हुर्रियत व समानता का नारा देकर क़ौमों के सोये हुए जज़्बातों को उभार दिया। कांग्रेस जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से सत्ता पर क़ाबिज़ रही वो एकमात्र राजनीतिक पार्टी है जिसका आधार देश की राजनीति व क़ौमी एकता पर आधारित है। उसी ने देश व क़ौम को ये दस्तूर दिया है। इस पार्टी के चोटी के लीडरों ने जिनमें गांधी जी, जवाहर लाल नेहरू, अबुल कलाम आज़ाद, रफ़ी अहमद क़िदवई जैसे बड़े राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने देश को राजनीतिक धर्मनिरपेक्षता, आपसी भाईचारगी का मिज़ाज दिया था और एक ऐसे समाज का ख़ाका प्रस्तुत किया था जिसमें विभिन्न भाषाओं, सभ्यताओं व संस्कृतियों के लिये जगह हो लेकिन बदक़िस्मती से इधर कुछ सालों से पार्टी में कुछ ऐसे लोग दाख़िल हो गये हैं जिनका अतीत अलगाव वादी और साम्प्रदायिकता की ध्वजवाहक पार्टियों से जुड़ा होने के कारण दाग़दार है। ऐसे लोग पार्टी पर छा गये हैं। इन नेताओं के साम्प्रदायिक पार्टियों से गुप्त संबंध हैं जो पूरी स्वतन्त्रता के साथ पूरे देश में दनदनाते फिरते हैं और सत्ताधारी पार्टी उनके विचारों व दृष्टिकोणों से लगातार नज़रे छिपा रही है और इस बात का ऐसी पार्टियां नाजायज़ फ़ायदा उठा रही हैं।

वर्तमान भारत की ये समस्या सबसे ज़्यादा गंभीर समस्या है और इस समस्या को केवल उसी तरीक़े से हल किया जा सकता है जिस तरीक़े को भारत के उन राजनीतिज्ञों ने अपने समय में स्थापित किया था। ये वास्तविकता है कि मायूसी और पीड़ित होने का भाव ही क्रान्ति पैदा करता है और ये भी एक वास्तविकता है कि किसी क़ौम का एक लम्बे अर्से तक शोषण नहीं किया जा सकता है। ये सभी मुश्किलें और ये सारा बिखराव केवल उस कोशिश का नतीजा है बहुसंख्य होने व हिन्दुराष्ट्र बनाने की आड़ में किसी एक गिरोह के अधिपत्य व वर्चस्व को दूसरी सभी कौमों पर थोपने का प्रयास किया जा रहा है। इस गिरती हुई आर्थिक साख और कमज़ोर रक्षा प्रणाली और दरिद्रता पर नियन्त्रण करना सम्भव है। जब क़ौमों के दिल दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण हों और ये संकल्प उस समय तक बाक़ी रहे जब पूरी क़ौम एकता का नमूना हो और उस क़ौम का हर हर व्यक्ति अपने अन्जाम से बाख़बर, व्यक्ति विशेष का सम्मान, दिली सुकून की दौलत से भी मालामाल हो और अपने राष्ट्र से उसका संबंध उसके लिये गौरव की बात हो। देश के शासन पर उसका विश्वास हो, वरना नित नये साधन व ताक़त भी ऐसे देश को फूट से नहीं बचा सकतीं जिसके नागरिकों में आपसी विश्वास की कमी हो।

कामिल इस्लाम - मुकम्मल सुपुर्दगी

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने हमको ईमान की दौलत अता फ़रमायी है। इस्लाम से नवाज़ा है। हमको भी ये चाहिये कि इस्लाम वाले, ईमान वाले बन जायें और अपने इस्लाम और ईमान को आगे बढ़ाने की कोशिश करें क्योंकि जो चीज़ आगे नहीं बढ़ती वो घटती है। ये क़ायदा है। दुनिया में कोई चीज़ एक सी नहीं रहती या बढ़ेगी या घटेगी। सब जानते हैं कि अगर पैसा रखे रहें, कहीं भी बैंक वग़ैरह में रखें तो उसकी वैल्यू कम हो जाती है ये क़ायदा है। ऐसे ही उन चीज़ों का मामला है कि छोड़ने पर कमी आती चली जायेगी और गर्द आ जायेगी। रोज़ झाड़ना पड़ता है। और इसी तरह हर इन्सान को अपने को ठीक करने के लिये रोज़ नहाना पड़ता है, रोज़ दांत मांजने पड़ते हैं, आंख धोनी पड़ती है और पैर धोने पड़ते हैं और बाल बनाने पड़ते हैं। अगर कोई इस चीज़ को छोड़ दे तो सोचो कुछ दिनों में क्या हो जायेगा?ऐसे ही अगर कोई हममें से अपने ईमान की फ़िक्र न करे, अपने अक़ीदे की फ़िक्र न करे, अपनी इबादतों की फ़िक्र न करे, अपने मामलों की फ़िक्र न करे, अपने संबंधों की फ़िक्र न करे तो उन सभी चीज़ों पर वही गर्द जम जाती है और इस तरह जम जाती है कि वो हाल होता है जो हमारे वतन के भाइयों का है कि शिक्र में डूबें हुए हैं जो दुनिया की सबसे नापाक, ख़तरनाक, घिनौनी चीज़ है जिसका लग़्व निकालने ही से बदन में झुनझुनी आ जाये। इसीलिये जो पाक जगहें होती है उनको शिर्कवालों से बचाया जाता है। इसीलिये कुरआन शरीफ़ में कहा गया है: (हरम पाक है, पाक है तो नजिस वहां नहीं जा सकते) (तौबा : 28)

अन्तरात्मा की जांच करते रहें

सबसे बड़ी नापाकी और गन्दगी, वो अक़ीदा की ख़राबी है और मुसलमानों में आजकल ये दस किलो दूध में दो सौ ग्राम पेशाब के क़तरे की जैसे आ चुका है। इसीलिये ये क़तरा ख़तरे की घन्टी है बिल्कुल ख़ालिस होना चाहिये अक़ीदा, मामले भी। क्योंकि वहां तो सालिड माल चाहिये, मिलावट वाला नहीं और ये रहेगा उसी वक़्त जब हम चेक करें, जैसे हर वक़्त हम अपने आप को चेक करते हैं। नौजवानों को देखिये हालांकि आप स०अ० ने ज़्यादा करने से मना फ़रमाया है कि अतिश्योक्ति किसी चीज़ में नहीं होना चाहिये लेकिन अन्दर की जो चीज़ें हैं उनकी फ़िक्र हमको क्यों नहीं है ताकि इस एतबार से हम अच्छे लगे। अन्दर तो बाहर से ज़्यादा बनाना चाहिये कि इसी लिये कहा गया है (कि बार बार थोड़ा थोड़ा अपने आपको ठीक करते रहो) क्योंकि एकदम से कोई बदल जाये ये मुश्किल है। इसी का नाम इस्लाह है।

इस्लाह ज़रूरी है

हर शख़्स को इस्लाह करनी चाहिये और जो है उसको ठीक करते रहना चाहिये ताकि वो चमकती रहे, दमकती रहे, महकती रहे, चहकती रहे, दूसरे भी महसूस करें तो जिस तरह कोई अपने को न संवारे तो भूत की सूरत हो जाती है लड़के भी उससे भागते हैं। ऐसे ही जो सीरत की चिन्ता नहीं करता उसके पास से भी लोग भागने लगते हैं। घमन्ड में पड़ जाते हैं। दूसरों को कमतर समझने वाला हो जायेगा, उसी की ज़मीन हड़पने वाला बन जायेगा। किसी की दुकान पर क़ब्ज़ा करने वाला बन जाये। रिश्वतर खोर बन जाये। सूद खोर बन जाये। दूसरों के अधिकारों को हड़पने वाला बन जाये और इस तरह की जितनी सामाजिक समस्यांए हैं उनमें बहुत ही गन्दा हो जाये तो लोग उससे भागने लगते हैं। तो ऐसे में हमसब की ज़िम्मेदारी है कि हमस ब चीज़ों को ख़ालिस करते चले जायें।

बनावट और जलन से दूर रहो

आज कल दो बातें हो गयी है एक तो जलन जो पुराना मर्ज़ है और मिलावट बनावट की है। अब अगर ये नहीं है तो नमाज़ हमारी कैसी ही हो अल्लाह कुबूल कर लेंगे लेकिन

आजकल बनावट के साथ लोगों ने उसको योगा भी बना दिया है। ये भी समस्या है कि नमाज़ तो पढ़ रहे हैं लेकिन अल्लाह के सामने सर झुकाने कितने आ रहे हैं? बल्कि आना तो इस तरह से चाहिये था कि मस्जिद में क़दम रखते ही कहते : (कि रहमत के दरवाज़े अल्लाह खोल दीजिये) अगर बन्द होंगे तो ज़ाहिर है कि वसवसे आयेंगे। लेकिन नियत ही न हो तो क्या ये सब इलाज है जो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने बताया है। इसी तरह हसद है इसके बहुत से इलाज बयान करते हैं। अकाबिर व सूफ़िया इत्यादि की कैसे दूर होगा?हदीस में आप स0अ0 ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें ऐसी है जो हर शख़्स में होती है, हसद, ज़न, तीरह यानि शगुन लेना। तो जब इलाज पूछा, अब देखिये इलाजे नबवी अल्लाहु अकबर! आप ने फ़रमाया, "अगर हसद हो तो उस पर जुल्म न करो, उसके ख़िलाफ़ तुमहरी तरफ़ से कोई कार्यवाही न होनी चाहिये न ज़बानी, न अमली, अब ग़ौर करे कि हसद गन्दगी है और बदज़बानी भी गन्दगी है और हर ज़मीन की एक खाद होती है और इन्सान भी मिट्टी का बना हुआ है और उसके अन्दरदिल इत्यादि सब मिट्टी का होता हैर और वो हसद बदगुमानी और शगुन लेना ये दिल की खाद है। और खाद ऊपर नहीं रखी जाती वरना बदबू फैलेगी। और अगर अन्दर गयी तो फूल खिलाएगी। अब देखिये अल्लाह के रसूल स0अ0 ने किस क़दर ग़ैर मामूली इलाज बताया दिल पर गुज़र तो जाएगी जब अप कुछ कहेंगे ही नहीं लेकिन ये चीज़ हमारे लिये ख़ैर व बरकत की वजह बन जायेगी।

इबादात भी ख़ालिस कीजिये

ऐसे ही हमारे मामले भी ख़ालिस होना चाहिये और उसमें इबादतामें कोई और चीज़ शामिल न हो और अगर ज़्यादा आजकल कोई दुनियावी का नफ़ा भी मिल जाये और उसके अलावा और आप देखिये कि निकाह में रस्म व रिवाज की मिलावट न हो और बेजा रिया की मिलावट न हो तो निकाह बहुत उम्दा होगा और बरकत वाला बन जायेगा और इबादत बन जायेगा।

कुल मुसलमान मुकम्मल इस्लाम चाहिये

अब इसी तरह से कहा गया है कि तुमको मौत न आये मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो चुके हो और मुस्लिम कैसेः (कि इस्लाम में पूरे के पूरे दाख़िल हो जाओ) और सल्लिम का शब्द असाधारण है मतलब है कि अल्लाह से ऐसा मामला कर लो कि ज़र्रा बराबर भी तुम्हारे अन्दर अल्लाह के हुक्म ख़िलाफ़ अल्लाह की तालीम के ख़िलाफ़ कितना भी तरद्दुद नहीं आना चाहिये यानि सुलह हो जायेगी। जो हुक्म हो उसी को बजा लाना है और सारे मुसलमानों से कहा जा रहा है कि न इस्लाम आधा न मुसलमान आधा लेकिन आजकल दोनों चीज़ें आधी अधूरी। हालांकि दोनों तरफ़ से सौ फ़ीसद होना चाहिये।

अब दाख़िल कैसे हो? वो धीरे–धीरे होना पड़ेगा। जैसे आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ और आगे बढ़ा यहां तक कि मेम्बर पर पहुंच गया। मालूम हुआ इस तरह धीरे–धीरे बढ़ता गया कि कामिल इस्लाम में दाख़िल हो गया।

औलाद के अक़ीदे की फ़िक्र कीजिये

हज़रत याकूब अलै0 के क़िस्से से भी मालूम हुआ कि जो जितना नबी के क़रीब होगा उतनी ही उसको अक़ीदे की फ़िक्र होगी। तो ऐसे ही हममें से हर शख़्स को औलाद की फ़िक्र होनी चाहिये कि क्या पढ़ रहा है? और कहां पढ़ रहा है? आज पूरे हिन्दुस्तान का जायज़ा लें मालूम होगा कि किस तरह लोग अपने बच्चों का अक़ीदा दांव पर लगाये हुए हैं। बड़े–बड़े पैसे वाले भी अपने बेटों को जहन्नम में डालने को तैयार हैं।

परेशानियों का हल ख़ालिस दीन में है

अब लोग आते हैं परेशानी बताते हैं। हालांकि ज़कात निकालते नहीं। तो यही सब समस्यांए हैं। जिसकी वजह से दुनिया परेशान है। तो अगर हम लोग सही दीन पर अमल करने वाले बन जाये तो हमारी परेशानियं खुदब खुद दूर हो जायेंगी। सारे हालात ठीक हो जायेगे। क्योंकि नालाएकियों की वजह से हमारे ये सब हो रहा है। और ज़ाहिर है कि गाड़ी के पुर्ज़े हटेंगे तो वो गिर पड़ेगी वही हाल हमारा है और इसीलिये कहते हैं कि तावीज़ दे सब हल हो जाये। न नमाज़, न रोज़ा, न सब कुछ, बस जुगाड़ से काम चल जाये। ये नहीं बल्कि पहले पूरी मशीन ठीक करो, उसके बाद ज़रूरत हो तो कर सकते हैं। तो ठीक कहां से हो सकता है? ज़रूरत इस बात की है कि हम बग़ैर मिलावट वाला दीन अल्लाह के दरबार में पेश करें। अल्लाह तआला हम सबको सही समझ भी अता फ़रमाये और कामिल इस्लाम की दौलत भी अता फ़रमाये।

मुसलमानों को समस्याओं का सामना क्यों?

मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी

वर्तमान युग में यूं तो हर जाति व हर वर्ग अनगिनत समस्याओं से घिरा हुआ है। लेकिन इस्लामी उम्मत दूसरी जातियों व क़ौमों की तुलना में ज़्यादा समस्याओं से घिरी हुई नज़र आती है। मुसलमान केवल एक देश में समस्याओं का सामना नहीं कर रहे हैं बल्कि लगभग हर देश में समस्याओं से घिरे हुए हैं। जबकि मुसलमानों को दूसरी सभी जातियों व क़ौमों की तुलना में समस्याओं का कम सामना होना चाहिये था क्योंकि वो जिस दीन के मानने वाले हैं वो समस्याओं से छुटकारा पाने के लिये बेहतरीन और व्यापक शिक्षांए प्रस्तुत करता है। इस्लाम जीवन के हर वर्ग में अपने मानने वालों का बेहतरीन मार्गदर्शन करता है। वो ऐसे उसूल बताता है जिस पर चलकर इन्सान की कामयाबी दोनों जहां में यक़ीनी है। मगर उसके बावजूद हमें नज़र आता है कि दुनिया में मुसलमान परेशान हैं। ज़िल्लत व रुस्वाई का सामना कर रहे हैं। अस्ल में इसका कारण ये है कि वो इस्लाम के मानने वाले तो हैं लेकिन इस्लामी शिक्षाओं पर बहुत से मुसलमानों का अमल नहीं है। ज़ाहिर सी बात है कि जब वो इस्लामी शिक्षाओं पर कार्यरत नहीं होंगे तो जीवन के विभिन्न वर्गों में उन्हें सफलता कैसे मिल सकेगी ?यही वो राज़ है जिसके कारण मुसलमान मुसीबतों का सामना कर रहे हैं, समस्याओं से घिरे हुए हैं। पतन की ओर अग्रसर हैं।

आम तौर से ऐसा नज़र आ रहा है कि जिस प्रकार दूसरी जाति व क़ौमें जीवन व्यतीत कर रही हैं, उसी प्रकार मुसलमान भी जीवन व्यतीत कर रहें हैं। मिसाल के तौर पर वर्तमान युग में भौतिकवादी उन्नति को उन्नति समझा जा रहा है तो मुसलमान भी भौतिकता की प्राप्ति को उन्नति समझ रहे हैं। इसलिये सारा ज़ोर अपनी अर्थव्यवस्था को स्दृढ़ करने में लगाये हुए हैं। अर्थव्यवस्था पर सारा ध्यान देने के कारण जीवन असंतुलित हो गया है।

जीवन के दूसरे भाग जैसे व्यवहारिकता, सामाजिकता, सभ्यता, शिक्षा, दीन व धर्म, मानवीय मूल्यों से या तो आज के मनुष्यों का रिश्ता बिल्कुल टूट गया है या फिर केवल नाम का रह गया है। वास्तव में धन–दौलत को अपने जीवन का उद्देश्य बना लेने के कारण आज के इन्सान का सारा झुकाव भौतिकता की ओर हो गया और जीवन से दूसरे बहुत से हिस्से हट गये।

ये बहुत अफ़सोस की बात है कि दौलत कमाने के लिये जायज़ व नाजायज़ तरीक़ों के बीच कोई अन्तर ही नहीं किया जाता है। न ब्याज के लेन–देन का ख़्याल रखा जा रहा है। न झूठ बोलने से परहेज़ किया जा रहा है। न पद व वादों का ख़्याल रखा जा रहा है। आजकल तो देखने में ये आ रहा है कि जैसे भी हो लोग पैसा कमाना शुरू कर देते हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य मानवीय मूल्यों की भावनाओं से वंचित हो जाता है। यहां तक कि मनुष्य का जीवन के वो हिस्से जिनका संबंध केवल मानवसेवा से था, उसको भी दौलत कमाने का ज़रिया बना लिया गया। जैसे शिक्षा जो हर मनुष्य के जीवन के लिये आवश्यक है और जिसके द्वारा न केवल मनुष्य को जीवन यापन का प्रकाश प्राप्त होता है बल्कि उसके वास्ते से मनुष्य की छिपी हुई योग्यताओं को भी निखरने का मौक़ा मिलता है, उसे भी एक कारोबार बना लिया गया है। अतः आज शिक्षा के द्वारा मोटी–मोटी रक़में कमायी जा रही हैं। जबकि कुछ सदियों पहले शिक्षा व्यवसाय न थी, सेवा थी। जो लोग शिक्षित होते वो अपने ऊपर मानव सेवा को आवश्यक समझते थे। ज्ञान के वो पहाड़ जो बच्चों को शिक्षा देते यहां तक कि उन्हें विभिन्न ज्ञानों व कलाओं का माहिर बना देते। उन्हें गणित में चरम तक पहुंचा देते। उन्हें मनोवैज्ञानिक बना देते। उन्हें उस समय का प्रसिद्ध चिन्तक जब विभिन्न विषयों के माहिर बन कर अमल के

मैदान में जाते तो वो भी उसी मानव सेवा के भाव से परिपूर्ण होकर काम करते हैं और अपनी पूरी ज़िन्दगी इसी लिये वक़्फ़ करते थे। दौलत की प्राप्ति का विचार भी उनके मन में न आता था। लेकिन जब वो छात्र जो मोटी–मोटी रक़में ख़र्च करके गणित, विज्ञान, तकनीक, इतिहास, मनोविज्ञान इत्यादि की शिक्षा प्राप्त करते हैं। वो शिक्षा प्राप्त होने के बाद बड़े पैमाने पर उनके द्वारा दौलत कमाने का इरादा रखते हैं। यही हाल इस समय चिकित्सा का भी हुआ है कि चिकित्सा को पूरी तरह पैसे कमाने का साधन बना लिया गया है। वो छात्र जो बीमारी दूर करने की विधि जानने के लिये कालिजो या यूनिवर्सिटयों का रूख़ करते हैं उनके ज़हन में पहले से ये बात होती है कि वो डाक्टर बनने के बाद अपना क्लीनिक बनायेंगे जहां ख़ूब पैसा कमांएगे, क्योंकि उनकी या उनके मां–बाप की निगाहों में डाक्टरी केवल एक पैसा कमाने का पेशा मात्र है। इसलिये वो इसकी शिक्षा पर मोटी रक़में भी ख़र्च करते हैं। एम.बी.बी.एस या एम.डी. इत्यादि में प्रवेश पाने के लिये छात्र बेचैन रहते हैं और इशारे पर लाखों रूप्ये ख़र्च करने के लिये तैयार रहते हैं। केवल पैसे तक इसको संकुचित करने का ही परिणाम है कि बहुत से डाक्टरों को मरीज़ों से इन्सानी हमदर्दी नज़र नहीं आती। उनकी नज़र तो बस मरीज़ की जेब पर होती है। इसीलिये प्राइवेट अस्पतालों या क्लीनिकों में मरीज़ के पहुंचने के साथ ही विभिन्न प्रकार के चार्जेज़ बता दिये जाते हैं। यदि मरीज़ इतने रूप्ये ख़र्च करने की क्षमता रखता है तो उसका इलाज किया जाता है वरना उसे हाथ भी नहीं लगाया जाता, चाहे वो मौत व ज़िन्दगी की कशमकश में ही क्यों न हो। इस सीमा तक डॉक्टरों के भौतिकवादी होने और सेवा भाव से वंचित होने के कारण गुर्दों और मानव अंगों की चोरी की वारदातें भी कभी–कभी सामने आती रही हैं।

ऐसे हालात में मुसलमानों पर ये ज़िम्मेदारी आती है कि वो अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए तबाह होती हुई मानवता को बचाने में महत्वपूर्ण किरदार अदा करें। मुसलमानों को मानवता की भलाई के लिये ठोस क़दम उठाकर मानवता का बेहतरीन नमूना पेश करना चाहिये। दुनिया भर के मुसलमानों को चाहिये कि वो अपनी ज़िन्दगी को केवल पैसे ही तक संकुचित न रखें बल्कि उनकी ज़िन्दगी आत्मिकता व जीवन के दूसरे वर्गों को भी अपने अन्दर समेटे हुए हो। पैसे से उनका संबंध आवश्यकता की हद तक हो। जब वो पैसा कमाने निकले तो हराम व हलाल के अन्तर को ध्यान में रखे। यही उनका दीन सिखाता है। अपने व्यापार के दौरान सच से काम ले। आप स0अ0 ने फ़रमायाः (सच्चा अमानतदार व्यापारी! क़यामत के दिन सच्चों और शहीदों के साथ उठाया जायेगा) रसूलुल्लाह स0अ0 की इस हदीस पर अमल करने के बाद मुसलमानों का कारोबार पाक होगा और उनकी कमाई में हराम का शुब्हा तक न होगा जिसका पूरा सवाब उन्हें क़यामत के दिन तो मिलेगा ही लेकिन दुनिया में भी उन्हें इसके बेहतरीन परिणाम नज़र आयेंगे। उनका समाज गुणी होगा और उनके द्वारा मानवीय मांगों की पूर्ति भी होगी।

अर्थव्यवस्था को एक हद तक महदूद रखने के बाद मुसलमानों को चाहिये कि वो अपने अस्ल माबूद की इबादत और उसकी हम्द व तस्बीह करने में लग जाये। जिस मक़सद के लिये उन्हें दुनिया में भेजा गया है उसे पूरा करने पर अपना पूरा ध्यान दे। रसूलुल्लाह स0अ0 की सीरत और आप स0अ0 हदीसों से भी मालूम होता है कि मानवजीवन केवल व्यापर तक सीमित नहीं है। बल्कि अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करना और भी इन्सानी ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी है। इसीलिये आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः (मुझे ये वही नहीं भेजी गयी कि और व्यापारी बन जाओ, बल्कि मेरे पास वही भेजी गयी है कि अल्लाह तआला की तस्बीह करो और सजदा करने वालों में से बनो)

अल्लाह की इबादत, बेहतरीन मामला, श्रेष्ठ व्यवहार, मानव सभ्यता और मानव मूल्य जैसे वर्गों का भी लिहाज़ करके अगर मुसलमान अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे तो उनकी ज़िन्दगी न केवल उनके लिये बेहतरीन होगी बल्कि दूसरी क़ौमें भी उनसे प्रभावित हुए बग़ैर न रह सकेंगी और अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिये उन्हें भी मुसलमानों जैसी ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर होना पड़ेगा। मुसलमान ख़ुशक़िस्मत हैं कि उनके पास वो दीन है जो हर मोड़ पर उनका पूरा मार्गदर्शन करता है। इस्लाम की रोशनी से दूसरी क़ौमें अपरिचित हैं। वो दीन पर चलकर अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकती हैं।

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

दुआ:

दुआ ख़ालिस इबादत का काम है और अल्लाह के साथ ख़ास है। अगर किसी और से दुआ की जाती है तो ये शिर्क है। कुरआन की आयत में साफ़–साफ़ आया है कि: (बस अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो) आयत में ये बात भी साफ़ हो गयी कि अगर कोई अल्लाह ही से दुआ करता है, ज़रूरत के वक़्त उसी को पुकारता है, मगर कभी–कभी किसी नबी या वली को भी इसमें शरीक कर लेता है और उनसे दुआ मांगने लगता है तो ये भी शिर्क है और अल्लाह ने इससे भी मना फ़रमाया है।

इस ज़माने के मुश्रिकाना कामों में ये काम भी है कि लोग क़ब्रों के पास जाकर उनसे दुआंए करते हैं, किसी क़ब्र वाले से औलाद मांगते हैं, किसी से रोज़ी मांगते हैं और अपनी दूसरी ज़रूरते मांगते हैं और समझते हैं कि ये हमारा काम बना देंगे। ये सब मुश्रिकाना काम हैं। बहुत से लोग रसूलुल्लाह स०अ० से दुआंए करते हैं और आपको मुश्किल दूर करने वाला समझते हैं, ये भी शिर्क है। दुआ उन कामों में से है जो ख़ालिस अल्लाह के लिये है। बहुत सी आयतों में अल्लाह ने साफ़–साफ़ फ़रमा दिया है कि दुआ सिर्फ़ अल्लाह से मांगो, ज़रूरत के वक़्त सिर्फ़ उसी को पुकारो, इरशाद होता है:

(और अल्लाह के अलावा किसी को भी मत पुकारो जो न तुम्हें फ़ायदा पहुंचा सकता है और न तुम्हें नुक़सान पहुंचा सकता है) (सूरह यूनुस: १०६)

एक जगह इरशाद है: (और उससे बढ़कर गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर ऐसों को पुकारे जो क़यामत तक उसका जवाब न दे सकें और उसकी पुकार का उनको पता ही न हो) (सूरह एहक़ाफ़: ५)

बात ये है कि दुआ किसी से नहीं की जा सकती सिवाए अल्लाह के और अगर किसी दूसरे से दुआ की जायेगी तो ये शिर्क है। एक हदीस में आए स०अ० ने यहां तक फ़रमाया: (तुममें से हर एक अपनी हर ज़रूरत अल्लाह से मांगे यहां तक कि अगर जूते का तल्ला भी टूट जाये तो वो भी अल्लाह से मांगे)

दीन व दुनिया की कोई छोटी या बड़ी ज़रूरत हो वो अल्लाह ही से मांगी जाये। उसी से दुआ की जाये। किसी के बारे में ये समझना कि ये ग़ैब जानते हैं। हमारी ज़रूरी पूरी कर देंगे, शिर्क है। हाँ बुज़ुर्गों से दुआ कराने की न केवल इजाज़त है बल्कि उसको बेहतर क़रार दिया गया है लेकिन यहां भी इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि वो भी सिर्फ़ दुआ करते हैं। अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाते हैं। अल्लाह तआला के प्यारे बन्दे होते हैं। इसीलिये अल्लाह तआला की रहमत उनके साथ ख़ास होती है और उनकी ज़्यादा दुआंए कुबूल होती हैं। मगर ये समझना कि उनकी दुआ अल्लाह तआला रद्द कर ही नहीं सकता, ये भी मुश्रिकाना अक़ीदा है। रसूलुल्लाह स०अ० से बढ़कर न कोई हुआ है और न होगा। आप स०अ० चाहते थे कि अबूतालिब इस्लाम कुबूल कर लें, मगर अल्लाह का फ़ैसला ये नहीं था वो उनकी चाहत और दुआ के बावजूद इस्लाम नहीं लाये और अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़रमायी कि: (आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते हैं, हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है) (सूरह क़सस: ५६)

चीज़ों को पाक करने के शरई तरीक़े

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्लामी शरीअत ने ज़िन्दगी के तमाम हिस्सों के लिये हिदायत दी है और पाकी को तो हदीस शरीफ़ में आधा ईमान बताया गया है। भला इससे जुड़े हुए हुक्म क्यों नहीं बयान होंगे? इसीलिये आप स0अ0 ने पाकी हासिल करने का तरीक़ा तफ़सील से समझाया है। स्तिन्जा करते वक़्त तीन ढेलों के इस्तेमाल का हुक्म दिया, पेशाब की छींटों से बचने की ताकीद की, और फ़रमायाः "पेशाब से बचो, इसलिये कि ज़्यादातर अज़ाबे क़ब्र इसी से होता है।" और आप स0अ0 ने फ़रमाया कि खाल की दबाग़त कर ली जाये तो पाक हो जाती है, इसी तरह फ़रमायाः "अगर तुममे से कोई जूते से नजासत को रौंद दे तो मिट्टी (रगड़ देना) उसके लिये पाकी का ज़रिया हो जाती है।" (अबूदाऊद, इब्ने माजा)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि अलग–अलग चीज़ों के पाक करने का तरीक़ा अलग होता है और सिर्फ़ धोना ही एक तय तरीक़ा नहीं है। और भी कई तरीक़ों से पाकी हासिल की जा सकती है। इसीलिये फ़ुक़्हा ने हदीसों की बुनियाद पर पाकी हासिल करने के तरीक़े तफ़सील से बयान फ़रमाये हैं।

सूखी गन्दगी को पाक करने का तरीक़ा: अगर कपड़े या जिस्म पर सूखी गन्दगी लग जाये तो उसको पाक करने का तरीका ये है कि पानी वग़ैरह से उसको धो लिया जाये। अगर एक बार धोने से गन्दगी साफ़ हो जाये तो पाकी हासिल हो जायेगी और अगर एक बार से साफ़ न हो तो उतनी बार धोए कि गन्दगी दूर हो जाये। सिर्फ़ तीन बार धोने से पाकी हासिल नहीं होगी। हां अगर नजासत ख़ून या उस जैसी कोई चीज़ हो जिसका रंग या असर इत्यादि नहीं गया और अस्ल चीज़ धुल गयी तो उसके असर को मिटाने के लिये साबुन इत्यादि का प्रयोग करना ज़रूरी नही है। इस असर के बावजूद कपड़ा पाक समझा जायेगा।

गीली गन्दगी को पाक करने का तरीक़ा: अगर पेशाब या उस तरह की कोई ऐसी गन्दगी लग गयी है जो सूखने के बादनज़र नहीं आती है तो उसके पाक करने का तरीका ये है कि उसको तीन बार धोया जाये और अगर मुमकिन हो तो हर बार उसको निचोड़ा जाये और तीसरी बार निचोड़ते वक़्त जितनी ज़ोर से निचोड़ा जा सकता हो निचोड़े, कपड़ा पाक हो जायेगा। ज़्यादा ताक़त लगा सकता था लेकिन कोताही की तो पाक नहीं होगा।

जिन चीज़ों को निचोड़ना मुमकिन न हो: रहीं वो चीज़ें जिनका निचोड़ा जाना मुमकिन नहीं होता जैसे कारपेट, क़ालीन या मोटा बिस्तर इत्यादि तो अगर ये चीज़ें नापाक हो जाये तो उनको पाक करने का तरीक़ा ये है कि उनको तीन बार धोया जाये और हर बार धोने के बाद इतनी देर के लिये छोड़ दिया जाये कि उससे पानी टपकना बन्द हो जाये, सूखना ज़रूरी नहीं, तीन बार ऐसा करने से इस तरह की चीज़ें पाक हो जायेगीं।

ज़मीन पाक करने का तरीक़ा: अगर ज़मीन नापाक हो जाये तो इसको पाक करने के कई तरीक़े बयान किये गये हैं:

1– एक तरीक़ा ये है कि अगर ज़मीन पेशाब जैसी किसी गन्दगी से नापाक हो गयी है तो उसको उसी तरह छोड़ दिया जाये यहां तक कि वो सूख जाये तो ज़मीन इस माने में पाक हो जायेगी कि उस पर बग़ैर कोई चीज़ बिछाए भी नमाज़ पढ़ना सही होगा।

2– दूसरा तरीक़ा ये है कि पानी डालकर उसको पाक किया जाये। ये तरीक़ा भी हदीसों से साबित है। एक ऐराबी एक बार मस्जिद नबवी आये और न मालूम होने की वजह से मस्जिद में पेशाब करने लगे। सहाबियों ने उनको डाटना शुरू कर दिया लेकिन आप स0अ0 ने फ़रमाया कि उनको पेशाब कर लेने दो फिर जब उन्होंने पेशाब कर लिया तो आप स0अ0 ने हुक्म दिया कि इस पेशाब पर एक डोल पानी डाल दो।

अगर पानी डालकर पाक करने का इरादा है तो नर्म और मिट्टी वाली ज़मीन में ये तरीक़ा है कि उस पर तीन बार पानी डाला जाये या एक कई बाल्टी या डोल वग़ैरह से ज़्यादा पानी डाल दिया जाये। अब जब ज़मीन सूख जायेगी तो पाक हो जायेगी। अब अगर ज़मीन पथरीली हो या पक्का फ़र्श हो कि पानी जज़्ब नहीं हो सकता तो तीन बार या एक बार में ज़्यादा पानी डालकर किसी वाइपर इत्यादि से उसको सुखा दिया जाये या कपड़े इत्यादि से पोंछ दिया जाये। तो ज़मीन पाक हो जायेगी।

यदि खोदना सम्भव हो तो जिस हिस्से पर गन्दगी लगी है उसे खोदकर अलग कर दिया जाये। ज़मीन तुरन्त पाक हो जायेगी। इसी तरह अगर ज़मीन से नापाक हिस्से को ऊपर वाले हिस्से को नीचे कर दिया जाये तब भी

ज़मीन तुरन्त पाक हो जायेगी।

अगर ज़मीन सूखने की वजह से पाक बता दी गयी फिर भी पानी वग़ैरह के पड़ने से तर हो गयी हो तो उसको नापाक नहीं कहा जायेगा और उस ज़मीन पर पड़े हुए पानी की छीटें बदन या कपड़े पर लग जाये तो नापाक नहीं होगा।

जूते और ख़ुफ़ को पाक करने का तरीक़ा: जूते चप्पल पहन कर ज़मीन पर पैर रखना होता है इसलिये इसमें गन्दगी लगने का बहुत ज़्यादा ख़तरा होता है इसीलिये शरीअत ने इसमें आसानी के पहलू को ध्यान में रखा और हदीस शरीफ़ में फ़रमाया गया कि "अगर तुममें से कोई अपने जूते से गन्दगी को रौंद दे तो मिट्टी उसके लिये पाक कर देने वाली है।" (अबू दाऊद, इब्ने माजा) अलबत्ता ये हुक्म केवल उन गन्दगियों के लिये है जिनको रगड़ कर मिटाया जा सकता है। जैसे गोबर, लीद या पाख़ाना इत्यादि। सही क़ौल के अनुसार इस तरह की चीज़ें चाहे सूखी हों या गीली मिट्टी पर अच्छी तरह रगड़ दे तो पाक हो जायेगी। लेकिन अगर पेशाब या शराब जैसी कोई नजासत चप्पल या जूते या खुफ़ पर लग जाये तो तीन बार धोए बग़ैर पाकी हासिल नहीं होगी। ये भी ख़्याल रहे कि ऊपर दी गयीं तफ़सीलें उस चप्पल जूते या खुफ़ के लिये हैं जो चमड़े या चमड़े जैसी किसी चीज़ की हों। अगर ये चीज़ें कपड़े या उस जैसी किसी चीज़ की हों तो कपड़े की तरह धोना ज़रूरी है।

धोबी या ड्राई क्लीन में धुले हुए कपड़े का हुक्म: जिस धोबी को कपड़े दिया है अगर वो उसकी धुलाई किसी तालाब झील या दरिया में करता है तो उसका धोया हुआ हर तरह का कपड़ा पाक हो जायेगा। अगर वो छोटे घड़े में हर तरह का कपड़ा धोता है तो वो कपड़े जो उसको दिये गये हैं अगर वो पहले से पाक थे तो धुलाई के बाद भी पाक होंगे और जो कपड़े पहले से नापाक थे वो नापाक रहेंगे इसलिये कि शरीअत का उसूल ये है कि "यक़ीन शक से नहीं मिटता" लिहाज़ा कपड़ा पहले जिस हालत में था वो एक यक़ीनी चीज़ है और तब्दीली के बारे में शक है लिहाज़ा धुलाई से कपड़ा जिस हालत में था उसी हालत में माना जायेगा। और यही तफ़सील ड्राई क्लीन की भी रहेगी।

टंकी पाक करने का तरीक़ा: छोटे हौज़ या पानी की टंकियों में अगर गन्दगी गिर जाये तो सबसे पहले ये किया जाये कि अगर नज़र आने वाली गन्दगी हो तो उसको निकाल दिया जाये फिर इसमें एक पाइप पानी निकालने के लिये और दूसरा पानी भरने के लिये है तो पानी निकालने वाला पाइप खोल दिया जाए और दूसरे पाइप से पानी छोड़ना शुरू किया जाये तो इस तरह ये होगा कि एक पाइप से पानी निकलेगा और दूसरे पाइप से पानी दाख़िल होता रहेगा और इस तरह सारा पानी पाक हो जायेगा और अगर टंकी इस तरह है कि उसमें लगातर पानी एक पाइप से गिरता रहता हा और दूसरे से लगातार निकलता रहता है तो नजासत गिरने से उस टंकी का पानी नापाक नहीं होगा। इल्ला ये कि रंग में अन्तर आ जाए। इसी तरह अगर लम्बाई व चौड़ाई का गुणनफ़ल 225 फिटा या 20.9 मीटर हो तब भी गन्दगी गिरने से नापाक नहीं होगा इल्ला ये कि रंग में फ़र्क़ न आ जाये।

नापाक गेहूं और आटा पाक करने का तरीक़ा: अगर गेहूं पर कोई गन्दगी जैसे पेशाब या नापाक पानी गिर जाये और उसके फूलने से पहले पता चल जाये तो तीन बार पानी से धो लेने से पाक हो जायेगा लेकिन अगर वो नजासत से फूल जाये तो उसको पाक करने का तरीक़ा ये है कि उसे पाक पानी में इतनी देर रखा जाये कि वो पानी जज़्ब कर ले फिर निकाल कर उसे सुखा लिया जाये। तीन बार इसी तरह किया जाये तो पाक हो जायेगा। और अगर आटे में कोई तर गन्दगी गिर गयी तो जहां तक उस गन्दगी का असर पड़ेगा वो आटा नापाक हो जायेगा और उसको पाक करने की कोई शक्ल नहीं।

खाल को पाक करने का तरीक़ा: हदीस शरीफ़ में आया है कि हर वो खाल जिसकी दबाग़त कर ली जाये वो पाक हो जाती है। (मुस्लिम) इसीलिये फ़ुक़्हा फ़रमाते हैं आदमी और ख़िन्ज़ीर के सिवा बक़िया सभी जानवरों की खाल दबाग़त से पाक हो जाती है। दबाग़त चाहे नमक डालकर करे या धूप में अच्छी तरह सुखाए खाल पाक हो जायगी और इस पर नमाज़ पढ़ना सही हो जायेगा। यही हुक्म उस वक़्त भी होगा कि जब खाल की नमी को मिट्टी के ज़रिये या हवा में डालकर दूर किया जाये।

कपड़े को मनी से पाक करना: कपड़े को मनी से पाक करने के लिये हज़रत आयशा रज़ि0 से दो रवायत मरवी है। एक में कपड़े के धोने का ज़िक्र है। (मुत्तफ़िक़ अलैह) और दूसरी रिवायत में उसको खुरचने का ज़िक्र है। (मुस्लिम) इसीलिये फ़ुक़्हा फ़रमाते हैं कि मनी अगर तर हो तो बग़ैर धुले कपड़ा पाक नहीं होगा और सूखी हो तो धोकर भी पाक किया जा सकता है। और अगर मनी को रगड़ कर इसको निकाला जा सकता है तो खुरच कर भी पाक किया जा सकता है। लेकिन अगर मनी जिस्म में लग जाये तो बग़ैर धोए पाकी हासिल नहीं की जा सकती है।

इस्लाम और लोकतन्त्र

मौलाना अतहर शम्सी मज़ाहिरी

इस्लाम और पश्चिम में अन्तर ये नहीं है कि पश्चिम लोकतन्त्र का क़ायल है और इस्लाम ख़िलाफ़त का। बल्कि इस पहलू से अन्तर ये है कि इस्लाम और अस्ल और अच्छे लोकतन्त्र का मानने वाला है। वास्तविकता ये है कि इस्लाम ही सच्चे लोकतन्त्र का नींव रखने वाला है। यदि इस्लाम का अस्तित्व न होता तो दुनिया कभी लोकतन्त्र से परिचित न हो पाती। इस्लाम के आने के पहले और इस्लाम के आने के बाद यदि इस्लाम के इतिहास का बिना पक्षपात के अध्ययन किया जाये तो ये बात साफ़ हो जायेगी कि इस्लाम के उदय व अधिपत्य के बाद ही ये सम्भव हुआ कि दुनिया लोकतन्त्र से परिचित हुई। ये इस्लाम ही है जिसने धीरे–धीरे वर्गों में लोकतान्त्रिक मूल्यों को बढ़ावा दिया। इस्लाम से पहले सत्ता में जनता की भागीदारी का विचार भी न था। इस्लाम ने दुनिया के इतिहास में पहली बार ऐलान किया: (और उनके मामले आपसी मशवरों से तय किये जाते हैं)

रसूलुल्लाह स0अ0 कुरआन की इस आयत पर भरपूर कार्यरत थे। इसीलिये आप स0अ0 राज्य के राजनीतिक व सुरक्षा के मामलों में लोगों की राय लेते और आप स0अ0 पूरी जनता को मामले को तय करने में शामिल करते थे। आप स0अ0 की मजलिस में हर व्यक्ति को ये अधिकार था कि वो पहुंचे और अपनी बात रखे। रसूलुल्लाह स0अ0 ऐसा नहीं करते थे कि आप ने देश के मामलों को केवल कुछ मंत्रियों और अधिकारियों के सुपुर्द कर दिया हो। आप स0अ0 की मजलिस में हर व्यक्ति को ये अधिकार था कि वो पहुंचे और अपनी राय रखे। अलबिदाया वन्निहाया में वो वाक़्या बहुत प्रसिद्ध है कि जब रसूलुल्लाह स0अ0 बदर के युद्ध के अवसर पर बदर के निकट पहुंचे और आप स0अ0 ने एक कुंवे के पास पड़ाव किया। उस समय एक व्यक्ति आप स0अ0 के पास आये और उन्होंने आप स0अ0 के इस निर्णय पर असहमति प्रकट की और एक नये पड़ाव की राय दी। आप स0अ0 ने उस व्यक्ति की राय को स्वीकार किया और अपने फ़ैसले को बदल दिया।

इस बात से पता चलता है कि आप स0अ0 के दौर में एक आम इन्सान को भी रणनीति जैसे नाजुक मसले में भी सीधे पैग़म्बर स0अ0 से खुली बातचीत करने का हक़ हासिल था। लोकतन्त्र का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा?क्या सत्ता में सम्मिलन का इससे बड़ा नमूना कहीं प्रस्तुत किया जा सकता है।

नबी करीम स0अ0 देश की समस्याओं और कामों में अपनी जनता को पूरी तरह से सम्मिलित रखते थे। आप स0अ0 लोगों से उनकी राय मांगते, उनके रूझानों को जानते और उनका तजज़िया करते थे। इस काम के लिये आप स0अ0 खुला जलसा भी करते थे और लोगों से राय भी मांगते थे। इसीलिये आप स0अ0 ने ख़न्दक़ की जंग के मौक़े पर लोगों को जमा फ़रमाया और उनसे सलाह ली। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 ने ख़न्दक़ खोदने का उपाय दिया। रसूलुल्लाह स0अ0 ने आप रज़ि0 की इस सलाह को कुबूल किया। रसूलुल्लाह स0अ0 बावजूद यका रियासत के सरबराह (भ्मंक व्‍ जीम ैजंजम) थे। आप स0अ0 लोगों के साथ इस तरह रहते थे कि अजनबी आदमी को पूछना पड़ता था कि तुममें मुहम्मद कौन है? आप स0अ0 के इस रवैये से लोग समझते कि देश का सरबराह उन्हीं में से एक है। आप स0अ0 ने न कभी अपने लिये महल बनाया और न ऐश व ऐश्वर्य की चीज़ों को अपनाया। इसी प्रकार आप स0अ0 ने दुनिया के इतिहास में पहली बार ये विचार दिया कि राजकोष किसी राजा की सम्पत्ति नहीं है बल्कि अल्लाह की अमानत है। जो अल्लाह के बन्दों का हक़ है। जो अल्लाह के बन्दों को ही मिलना चाहिये। आप स0अ0 के इस तरीक़े की ज़िन्दगी ने एक मिसाल पैदा कर दी। लोग आप स0अ0 की पाक ज़िन्दगी का हवाला देकर अपने शासक होने की आशा करने लगे। आप स0अ0 ने न्यायपसंद शासको को फ़ज़ीलतें सुनाई, इससे इतिहास पर एक न्यायप्रिय शासन श्रनेज त्नसम का एक नया विचार पैदा हुआ। रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया: तुममें से हर एक से अपने अधीनों के बारे में सवाल किया जायेगा

मानों कि आप स0अ0 ने शासन को एक प्रकार की ज़िम्मेदारी बना दी जबकि इससे पहले शासन बेख़बर और बेलगाम बना हुई था।

आप स0अ0 ने इतिहास पर अत्यधिक प्रभाव छोड़े, यहां तक कि एक चिन्तक को कहना पड़ा: Muhammad Overthrew the traditional

system of the globe.

यानि मुहम्मद स0अ0 ने दुनिया की रिवायती व्यवस्था को बदल डाला

यानि मुहम्मद स0अ0 दुनिया के सबसे कामयाब व्यक्ति थे।

प्रशासनिक व्यवस्था के पहलू से भी ये शब्द पूरी तरह ठीक हैं। आप स0अ0 ने बहुत ही कामयाब तौर पर ख़िलाफ़त को जिम्मेदारी से बदला और वास्तविक लोकतन्त्र का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः

(ऐ अल्लाह! मैं गवाही देता हूं कि सारे बन्दे आपस में भाई–भाई हैं)

आप स0अ0 ने सभी इन्सानों को भाई–भाई घोषित करने की श्रेष्ठ लोकतान्त्रिक भावना प्रस्तुत की है। मदीने की संधि आप स0अ0 के वास्तविक लोकतन्त्र का एक श्रेष्ठ नमूना है। आप स0अ0 ने गुलामों के साथ बेहतर व्यवहारक करने की शिक्षा देकर लोकतान्त्रिक विचारों को बल दिया। आप स0अ0 ने औरतों के साथ अच्छे व्यवहार की शिक्षा और उनके अधिकारों की पूर्ति पर बल दिया। आप स0अ0 के आदेशों के परिणामस्वरूप ही दुनिया में बराबरी के विचार को बढ़ावा मिला और वर्तमान लोकतन्त्र की राह हमवार हुई।

आप स0अ0 की वफ़ात के बाद भी मुसलमानों में आमरियत क़ायम नहीं हुई। इसीलिये हज़रत अबूबक्र रज़ि0 का चुनाव बहुत ही लोकतान्त्रिक रूप से हुआ। आप स0अ0 की वफ़ात के बाद बनू सादह में सहाबा किराम रज़ि0 की एक मीटिंग हुई जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि0 के हाथ पर बैत की गयी। ये मीटिंग उस समय की एक संविधानिक सभा थी, जिसने हज़रत अबूबक्र रज़ि0 को ख़लीफ़ा चुना। हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने अपना उत्तराधिकारी चुनते समय अलग–अलग बहुत से सहाबा रज़ि0 से व्यक्तिगत राय ली। इस मामले में बहुत सी चर्चाएं हुईं और आख़िर में हज़रत उमर रज़ि0 का नाम बहुत ही लोकतान्त्रिक रूप से अस्तित्व में आया। मानो कि ये निर्णय अघोषित चुनाव समिति की सहमति के परिणाम में सामने आया। हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी वफ़ात से पहले एक चुनावी कौन्सिल का गठन किया, जिसने हज़रत उस्मान रज़ि0 को ख़लीफ़ा चुना। चारों ख़लीफ़ा का चुनाव इस्लामी संविधान की रोशनी में प्रकाश में हुआ।

रोशो पश्चिमी सभ्यता का एक बड़ा विचारक और लोकतन्त्र का प्रचारक माना जाता है। उसका एक वाक्य बहुत प्रसिद्ध हैः "मनुष्य आज़ाद पैदा हुआ था लेकिन मैं उसे ज़ंजीरों की क़ैद में पाता।"

रोसो का ये वाक्य दुनिया में बहुत प्रचलित है। लेकिन वास्तविकता ये है कि ये रोसो का अपना बनाया हुआ अपना वाक्य नहीं है बल्कि हज़रत उमर रज़ि0 के एक जुम्ले से लिया गया है। हज़रत उमर रज़ि0 की ख़िलाफ़त के दौरान अम्र बिन आस रज़ि0 मिस्र के गवर्नर थे। इस दौरान मिस्र में एक रेस का आयोजन हुआ। इस दौड़ में मिस्र के गवर्नर के बेटे से आगे एक क़िब्ती निकल गया। गवर्नर के बेटे ने उस क़िब्ती को मारा और ज़बरदस्ती दौड़ से बाहर करने की कोशिश की। क़िब्ती इस बात पर बहुत नाराज़ हुआ और वो शिकायत लेकर हज़रत उमर रज़ि0 के पास मिस्र पहुंच गया। हज़रत उमर रज़ि0 ने शिकायत सुनकर गवर्नर और गवर्नर के बेटे दोनों को मदीना बुलाया। जब ये लोग मदीना आ गये तो हज़रत उमर रज़ि0 ने उस क़िब्ती के हाथ में कोड़ा दिया और कहा कि गवर्नर के उस लड़के को मारो जिसने तुम्हें मारा है। अतः उस क़िब्ती ने हज़रत अम्र बिन आस के बेटे को मारा। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि0 ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 को सम्बोधित करते हुए कहा थाः

"ऐ अम्र बिन आस! तुमने लोगों को कब गुलाम बना लिया, हालांकि उनकी माओं ने उनको आज़ाद जना था।" (सीरतुस्सहाबा, अलबिदाया वन्निहाया)

इस्लाम में तानाशाही के लिये कोई जगह नहीं है बल्कि इस्लाम तो सच्चा लोकतान्त्रिक धर्म है। इस्लामिक लोकतन्त्र वर्तमान लोकतन्त्र से बहुत ही श्रेष्ठ है। इस्लामिक लोकतन्त्र एक आइडियल लोकतन्त्र है। आप स0अ0 ने अगर इस्लाम की ये आइडियल लोकतन्त्र न स्थापित की होती तो दुनिया को लोकतन्त्र का विचार कभी नहीं मिलता और लोग लोकतन्त्र के बारे में कभी सोच भी न सकते।

इस्लाम का लोकतन्त्र हर प्रकार के भ्रष्टाचार से पाक एक पवित्र व्यवस्था है जिसमें समानता व न्याय का बोलबाला है और जनता को उसके सभी अधिकार पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं। पश्चिम का लोकतन्त्र हमारे ऊपर कोई एहसान नहीं है उससे कहीं श्रेष्ठ लोकतन्त्र कुरआन व हदीस की शक्ल में हमारे पास सुरक्षित है।

अनमोल वचन

इमाम मालिक बिन अनसुल मदनी

(93 हि0 – 179 हि0 जगह – मदीना मुनव्वरा)

(ताबईन के बाद 'मालिक' अल्लाह की मख़लूक़ के लिये एक हुज्जत है)

(हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई रह०)

❖ उलमा की ज़िम्मेदारी है कि वो हुक्काम और वलीयान सलतनत से रिश्ता क़ायम रखें ताकि उनको उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाया जाता रहे।

❖ मौत की सख़्तियां और क़यामत की हौलनाकियों को मुख़्तसर रखकर इन्सान को ऐसे काम करना चाहिये जिनसे वो सख़्तियां आसान हो जायें।

❖ अगर इन्सान जहन्नम से जुड़ी हुई आयतों और हदीसों पर ग़ौर कर ले तो दुनिया की आराइशों के बदले उसकी सख़्तियों से बचना आसान हो जायेगा।

❖ मौत से पहले इन्सान के लिये ये आसान है कि वो अपने आप को नफ़्स की इत्तेबा से दूर रखे

❖ दुनियावी ज़िन्दगी में इन्सान को अल्लाह की नाराज़गी और मज़लूम की बद्दुआ से बचे रहने का ख़ास ख़्याल रखना चाहिये। ख़ुदा की बारगाह में तक़रीब के हुसूल के लिये तक़वे का दामन मज़बूती से पकड़े रहना और नफ़्स की इस्लाह करते रहना मुफ़ीद अमल है।

❖ दीनी मामलात में झगड़ा दिल से इल्म का नूर ख़त्म कर देता है और इसकी वजह से दिल में सख़्ती व नफ़रत के जरासीम भी पैदा हो जाते हैं।

❖ तवाज़ो का सही अर्थ ये है कि इन्सान केवल नाम के लिये और प्रसिद्धी की चाहत को दिल से निकाल दे।

❖ सब्र की सही तारीफ़ ये है कि इन्सान हलाल की कमाई और आरज़ुओं का सिलसिला कम रखे।

❖ हक़ीक़ी दुनिया उसको कहते हैं जिसमें जिस्म सेहतमन्द और दिल जायज़ चीज़ों से बहरा वर हो।

❖ तवाज़ों का संबंध लिबास से नहीं बल्कि दीनदारी से होता है।

❖ इल्म नाम है एक ऐसे नूर का जो अल्लाह तआला अपने बन्दों के दिलों में पैदा फ़रमाता है।

❖ इल्म की चमक उस शख़्स पर दिखाई देती है जो साहबे तक़वा और ख़ुशू व ख़ुज़ू वाला हो।

❖ अमल से पहले इल्म का हासिल करना ज़रूरी है।

❖ इल्म पाने के साथ ज़रूरी है कि इन्सान अपने अन्दर सुकून वक़ार हिल्म व बुर्दबारी की ख़ासियतें भी पैदा करे।

❖ वो इल्म वाले जिनका संबंध ज़िक्र व शुग़ल से हो उनको चाहिये कि वो हंसी मज़ाक से परहेज़ रखें।

❖ कहकहा लगाना एक इल्म वाले की शान के ख़िलाफ़ बल्कि उसको सिर्फ़ मुस्कुराहट पर ही संतुष्ट होना चाहिये।

❖ ज़्यादा बोलना भी कभी–कभी इन्सान को इल्मी सतह से गिरा देता है।

❖ इल्म की नेमत का हक़ अदा करना ये है कि इल्म वाला उसे ख़राब न करे बल्कि उसको ज़्यादा से ज़्यादा फैलाने की फ़िक्र में रहे।

❖ इल्मे दीन की बुलन्दियों की प्राप्ति फ़िक्र की मन्ज़िले तय किये बग़ैर मुश्किल है।

❖ इन्सान की इसलाह का पहला मरहला ये है कि वो बेकार की बातों से ख़ुद को दूर रखे।

❖ सब्र वाले की पहचान ये है कि उसकी ज़बान से अल्लाह तआला हिकमत के बोल जारी फ़रमा देते हैं।

❖ जिसको दिल के सुकून की दौलत मिल जाये तो ख़ैर हासिल हो गयी।

❖ इन्तसार ख़ातिर इन्सान के लिये सबसे बड़ी मुसीबत और दिल का सुकून सबसे बड़ी नेमत है।

❖ अगर किसी को ख़ैर की तौफ़ीक़ मिल जाये तो ये उसके लिये बहुत बड़ी सआदत की बात है।

संकलनकर्ता: मुहम्मद अरमुग़ान अबूबक्र नदवी

यूरोपीय औरतें
इस्लाम क्यों कुबूल कर रही हैं

आंतकवाद, इन्तिहा पंसदी और औरतों के अधिकारों के बारे में बहुत से नकारात्मक प्रोपगन्डे के बावजूद पश्चिम में इस्लाम की प्रसिद्धी बहुत बढ़ रही है। दिलचस्प बात ये है इस्लाम को औरतों के ख़िलाफ़ धर्म क़रार दिये जाने के सारे शोर गुल के बावजूद पश्चिम की औरतें मर्दों से कहीं बढ़ चढ़ कर इस्लाम कुबूल कर रही है। मीडिया में कभी–कभी इस बारे में ख़बरे और अनुभव निकलते रहते हैं। ऐसी ही एक अनुभवी रिपोर्ट कुछ समय पहले श्रेष्ठ अमरीकी पत्रिका क्रिश्चन साइंस मानीटर के एक एडीशन में शामिल की गयी जिसका शीर्षक है "वाई यूरोपियन वुमेन आर टरनिंग टू इस्लाम"?

पीटर फ़ोर्ड की संकलित की गयी उस रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम खोज करने वाले दोनों कहते हैं कि 9/11 के बाद इस्लाम के बारे में पैदा होने वाली जिज्ञासा से इस्लाम का पैग़ाम ज़्यादा से ज़्यादा यूरोपीय नागरिकों को अपील करने का कारण बन गया है। निश्चित आंकड़ो तो पता नहीं लेकिन यूरोप में मुसलमानों की आबादी पर नज़र रखने वाले लोगों का अन्दाज़ा है कि हर साल कई हज़ार मर्द और औरत इस्लाम कुबूल करते हैं। ये खोजी निशानदेही करते है कि मुसलमान होने वालों में से बहुत मुश्किल से कुछ हिंसा का रास्ता अपनाते हैं। अमरीकी पत्रिका के निकाले गये ये परिणाम इस बात का खुला ऐलान और स्वीकार है कि इस्लाम को आतंकवाद का मुबालग़ा घोषित करना क़तई बददयानती है और इसका हक़ीक़त से कोई संबंध नहीं।

पत्रिका के अनुसार जबकि मर्द के मुक़ाबले में इस्लाम के कुबूल का रूझान औरतों में ज़्यादा है लेकिन माहिरीन का कहना है कि आम ख़्याल के विपरीत उसका कारण मुसलमान मर्दों से शादी नहीं और बहुत कम ही औरतें इस कारण से इस्लाम कुबूल करती हैं। इस्लाम के कुबूल में शादी की भूमिका के बारे में बरमिंघम यूनीवर्सिटी की टीचर डाक्टर हीफ़ा जव्वाद का कहना है कि अतीत में जबकि ये एक आम कारण था किन्तु अब अधिकतर औरतें अपने यक़ीन के आधार पर मुसलमान हो रही हैं। मुसलमान होने वाली हज़ारों यूरोपीय औरतों में से एक फ़्रांस की मिस मैरी भी हैं। वो तीन साल पहले इस्लाम में दायरे में दाख़िल हुई थीं।

जब उनसे पूछा गया कि क्या उसकी मुहब्बत उसके फ़ैसले का कारण बनी है? तो उसने हंसते हुए कहा कि जब मैने अपने दफ़्तर के साथियों को बताया कि मैं मुसलमान हो गयीं हूं तो उनका पहला सवाल यही था कि क्या तुम्हारा कोई मुसलमान ब्वायफ़्रेंड है। उन्हें यक़ीन नहीं आ रहा था कि ये फ़ैसला मैंने अपनी आज़ाद मर्ज़ी से लिया है और मिस फ़ीलोट के बक़ौल इस्लाम का रास्ता उसने इसलिये अपनाया है क्योंकि इस्लाम अल्लाह तआला से इन्सान की कुरबत चाहता है। इस्लाम ज़्यादा सादा और पूर्ण है। ज़्यादा साफ़ और स्पष्ट है। इसलिये ज़्यादा आसान भी है।

इस नौउम्र फ्रांसीसी महिला ने अपने इस्लाम कुबूल करने के कारणों को और स्पष्ट करते हुए कहा मुझे ज़िन्दगी बिताने के लिये रास्ते की तलाश थी। हर इन्सान को ऐसे नियम व रवैयों की ज़रूरत होती है जिनके मुताबिक़ वो ज़िन्दगी गुज़ार सके। जबकि इसाइयत मुझे ऐसे रिफ़रेन्स प्वाइन्टस नहीं दे सकी। मैरी फ़िलोट का कहना है कि इस्लाम मेरे लिये मुहब्बत बर्दाश्त और अमन का पैग़ाम है।

पीटर फ़ोर्ट खोजियो के हवाले से कहते हैं कि वो दलीले और कारण जो इस्लाम कुबूल करने वाली अधिकतर यूरोपीय औरतों के विचार की अक्कासी करते हैं उनके अनुसार औरतों की एक बड़ी संख्या पश्चिमी सभ्यता की वैचारिक, अविश्वासी और रवैयों के ख़िलाफ़ प्रतिक्रिया प्रकट कर हरी हैं। आपसी संबंध, एक दूसरे का ख़्याल रखने और एक दूसरे के लिये मामलों और समस्याओं में शिरकत के जो नियम इस्लाम देता है वो पश्चितम की औरतो का दिल जीत रहा है। डच औरत के

इस्लाम कुबूल करने पर रिसर्च करने वाली कीरीन वैन के निकट पश्चिमी औरतों में इस्लाम की प्रसिद्धी का बड़ा कारण मर्दों और औरतों के अलग–अलग कार्यक्षेत्र का और अधिकार व कर्तव्य का वो स्पष्ट विचार है जो इस्लामी शिक्षांए उपलब्ध कराती हैं। इस्लाम में ख़ानदानी और औरत के मादराना किरदार का बड़ा स्थान है। यहां औरतें जिन्सी खिलौना नहीं होतीं।

ये राय यक़ीनन बड़ी महत्वपूर्ण और ध्यान देने योग्य है क्योंकि इ स्लाम औरतो को मां, बहन, बीवी और बेटी की हैसियत से जो इज़्ज़त व एहतराम देता है पश्चिमी समाज में उसका कोई विचार नहीं। इस जिंसज़दा सभ्यता में औरतों के अधिकारों और औरतों की आज़ादी के तमाम दावो के बावजूद औरत केवल मर्दों का खिलौना है। भौतिकवादी समाज में ऐसा होना बिल्कुल प्राकृतिक है। जब रूहानी जीवन और आख़िरत की कामयाबी का आला नसबुल ऐन इन्सान के पेशनज़र ही न रहे और इसकी सारी मेहनत का मक़सद सिर्फ़ आनन्द की प्राप्ति हो तो उसका परिणाम इसके सिवा कुछ भी निकल नहीं सकता है। मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम समाज के रवैयों के इस अन्तर को स्पष्ट करते हुए न्यूजर्सी मे रहने वाली लैटिन अमरीकी नौमुस्लिमा जिसे मैन पाइनेट कहते हैं। मुसलमान मर्द आपको हाय मैरी तुम कैसी हो के शब्द से सम्बोधित नहीं करते बल्कि आम तौर से हैलो सिस्टर कहते हैं। वो आपको जिन्सी खिलौना समझकर नहीं घूरते।

क्रिश्चिन साइंस मानीटर की एक और रिर्पोट जो 27 दिसम्बर 2004 को लातीनी अमरीकन इस्लाम में अपने सवालों का जवाब ढूंढते हैं के शीर्षक से छपी थी उसके हवाले से है। क्रिस्टाइन की मुरत्तब की हुई उस रिपोर्ट का आधारभूत विषय ही ये है कि पश्चिम में इस्लाम कुबूल के रोज़ बढ़ते हुए रूझान का एक महत्वपूर्ण कारण वो सम्मान है जो इस्लाम औरत को देता है। रिर्पोट के अनुसार अमरीका में लगभग चालिस हज़ार लैटिन अमरीकी नौमुस्लिम हैं जबकि हर साल लगभगर बीस हज़ार अमरीकी मर्द व औरत इस्लाम कुबूल करते हैं जिनमें कमोबेश 6 प्रतिशत लैटिन अमरीकी होते हैं और नौमुस्लिमों में एक बड़ी संख्यां का कहना है कि इस्लाम में उस विश्वास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस्लाम में औरतों के साथ बेहतर सुलूक किया जाता है।

आलोचना करने वाले कह सकते हैं कि नक़ाब की पाबन्दी औरतों के लिये मिल्कियत होने की पहचान लगती है लेकिन लातीनी औरत का कहना है कि उनके लिये ये एक ख़ुशगवार हक़ीक़त है कि जब वो रास्ते में होती हैं तो कोई उन्हें देखकर सीटी नहीं बजाता। जैनी या दूसरी! जो हज़ारो लातीनी मुस्लिम औरतों में शामिल हैं कहती हैं कि इस्लामी लिबास के नतीजे में लोग फ़ितरी तौर पर मुझे एक धार्मिक व्यक्तित्व का सा सम्मान देते हैं और एहतराम करते हैं।

फिर भी पश्चिम की बेख़ुदा सभ्यता और समाज से विरोध का ये कार्य अपने साथ मुश्किलें भी लाता है। पूरे हलक़े के साथ इस्लाम में दाख़िल होने वाली औरतों को अपने रिश्तेदारों की ओर से विरोध का सामना भी करना पड़ता है। नौमुस्लिम औरतों के निकट इस्का कारण इस्लाम है। औरतों के स्थान के बारे में फैलाई गयी ग़लतफ़हमियां हैं। जेरे नज़र रिपोर्ट के अनुसार मुसलमान हो जाने वाली कई लातीनी अमरीकी औरतें ने बताया कि पहले वो इस्लाम में औरतों के अधिकार के हवाले से उन्हीं घिसी पिटी बातों को जानती थीं जो पश्चिम में आम है लेकिन जब मुस्लिम औरतों से उनका मेलजोल हुआ तो उन्हें पता चला कि इस्लाम में औरत का स्थान कितना श्रेष्ठ है। मिस पाइनैट के अनुसार इस्लामी समाज में औरत का सम्मान इसलिये किया जाता है कि वो मां है वो बच्चों की परवरिश व निगरानी करती है और उसूल व जाब्ते पर अमल करती है।

पश्चिम के नये समाज की औरतें जिन कारणों से इस्लाम को अपने लिये एक नेमत और रहमत समझ रहीं हैं कितनी बेअक़्ली की बात है कि मुसलमान देशों में पश्चिम के ज़हनी गुलाम इस्लाम की इन्हीं शिक्षाओं को औरतों को पसमान्दगी का कारण घोषित कर देते हैं। और पश्चिम की नक़्क़ाली करते हुए औरतों को घरो से निकाल कर सड़को पर ले आने और उन्हें अधनंगा लिबास पहना देने और उनके फ़ैशन शो आयोजित कराने और उन्हें गली कूचे की रौनक बना देने ही को उन्नति की मेराज घोषित करते हैं। फिर भी औरतों की आज़ादी के नाम पर पश्चिमी सभ्यता ने औरत को जो सराब दिखाया था, उसकी हक़ीक़त अब पूरी तरह खुल चुकी है। इसलिये अब मुस्लिम दुनिया की औरतों को भी पश्चिम के अन्धे अनुसरण के बजाए उन अधिकारों की प्राप्ति की जद्दोजहन करनी चाहिये, जो इस्लाम ने उन्हें दिये हैं।

भारतीय मुसलमान और देश की राजनीति

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

भारत के इतिहास में मुसलमानों की भूमिका हमेशा कुंजी की रही है। इस देश को संवारने और इसको सफलता की चोटियों तक पहुंचाने में मुसलमानों ने बहुत कुर्बानियां दी हैं। लेकिन आज़ादी के बाद से मुसलमानों की हैसियत केवल राजनीतिक मोहरों की रह गयी है जिनका प्रयोग हर छोटी बड़ी पार्टियां अपने लाभ हेतु करती रही हैं। आज़ादी के बाद से मुसलमान राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक हर प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है। जिसकी गंभीरता का अनुभव "सच्चर कमेटी व कृष्णा आयोग की रिपोर्टों" से भलीभांति किया जा सकता है।

ये एक वास्तविकता है कि देश का वो वर्ग जो कल तक सत्ता के गलियारों से छोटे–छोटे टुकड़ों को भी न पाते थे और जिनको समाज में अछूत, आदीवासी, दलित और दबा कुचला वर्ग कह कर अलग थलग कर दिया गया था, आज वो सत्ता के दावेदार हैं बल्कि उस पर क़ाबिज़ हैं। लेकिन भारतीय मुसलमान पच्चीस करोड़ की संख्यां में होने के बावजूद भी उनका कोई वज़न नहीं है बल्कि बहस तो यहां तक हो रही है कि उनको इस देश में रहने का अधिकार है भी या नहीं?वो इस पोज़ीशन में नहीं है कि वो अपनी कोई भी बात मनवा सकें। जबकि संविधान के अनुसार उनको वो अधिकार प्राप्त ही क्यों न हो बल्कि अब तो इतनी गिरावट आ चुकी है कि छोटी–छोटी पार्टियों के आगे हाथ फैलाने पर मजबूर हैं। हर नयी सरकार के बारे में वो खुश फ़हमियों में पड़ जाते हैं और एक मायूस, मजबूर, लाचार प्रजा की भांति सरकार से नवाज़िश व करम की उम्मीद लगा बैठते हैं और फिर अपनी कमियों व कोताहियों को "रिज़र्वेशन" के द्वारा पूरा करना चाहते हैं और जहां आंशिक रूप से उनको रसूख मिल जाता है वहां समस्याओं की एक लम्बी लिस्ट दे दी जाती है लेकिन ये नहीं तय हो पाता कि काम कहां से आरम्भ किया जाये?परिणामस्वरूप किसी भी समस्या का हल नहीं निकल पाता।

भारतीय मुसलमान पिछले साठ सालों से विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के झण्डे तले भविष्य ढूंढते फिर रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हर पार्टी को उन्होंने अपना मसीहा समझा। वो कभी इस पार्टी तो कभी उस पार्टी की ढफ़ली बजाते रहे और वो पार्टियां "हिन्दुत्व" का हव्वा खड़ा करके अपना राजनीतिक लाभ उठाती रहीं। सच पूछिये तो इन धर्मनिरपेक्ष पार्टियों की हर दूसरी पॉलिसी ने मुसलमानों को और भी पस्त कर दिया है।

भारत के राजनीतिक परिदृष्य में देखा जाये तो चुनाव के क़रीब आते ही मुसलमानों को लुभाने की कोशिशें की जाती रही हैं। ऐसे मौक़े पर उनको खुद मुसलमानों से ही ताक़त पहुंचती है। पार्टी सत्ताधारी हो या अपोज़ीशन की, सब मुस्लिम वोट के सहारे ही राजनीति करने पर मजबूर हैं।

मुसलमानों के राजनीतिक स्थायित्व और उनकी समस्याओं को लेकर बहुत से महत्वपूर्ण चेहरे सामने आये और उन्होंने बहुत से नुस्ख़े भी पेश किये। कुछ लोगों ने मुसलमानों की राजनीतिक अवनति का एक कारण ये बताया कि उनके पास कोई मज़बूत लीडर नहीं है। नेतृत्व की कमी ने उनको सही मार्गदर्शन से वंचित कर रखा है। जबकि गली–गली कूचे–कूचे में मुसलमानों के इतने लीडर मौजूद हैं जिनका अतीत में विचार भी न था। बस अन्तर केवल इतना है कि वो क़ौम के सेवक थे। राजनीतिक ज़हन रखने वालों का कहना है कि जब तक मुसलमान राजनीतिक रूप से एकजुट नहीं हो जाते उनकी समस्याओं का हल नहीं निकलेगा। किसी ने कहा कि आवश्यकता है कि मुसलमान एक प्लेटफ़ार्म पर एकत्रित हों तब ही सुधार संभव है। बहुत से लोगों का कहना है कि मुसलमानों की एक अपनी राजनीतिक पार्टी ही उनको उनकी समस्याओं से छुटकारा दिला सकती है। इस प्रकार के न जाने कितने नुस्ख़े हैं जो क़ौम के "शुभचिन्तकों" ने दिये हैं लेकिन अफ़सोस है कि सारे नुस्ख़ों के साथ ये भी शर्त होती है कि जो कुछ भी हो हमारे ही नेतृत्व में हो और हमारे ही बैनर तले हो।

सच पूछिये तो मुसलमानों की अधिकतर समस्यांए ख़ुद उन्हीं की पैदा की हुई हैं और उनका हल सिर्फ़ उन्हीं के पास मौजूद है। बस आवश्यकता है इस्लामी शिक्षाओं को समझने की और उसको बरतने की और एक ऐसे नेतृत्व की जो नियत के इख़लास और पूरी लिल्लाहियत के साथ सामने आये। व्यक्तिगत लाभों के बजाय क़ौम का लाभ उसके निकट अधिक महत्वपूर्ण हो। साथ ही क़ौम उस नेतृत्व पर पूरा विश्वास करे और उसके फ़ैसले को अपना फ़ैसला समझे। ये भी ध्यान रहे कि राजनीति या शासन मुसलमानों की मांग नहीं है बल्कि नेक काम के बदले ये नेमत अल्लाह की तरफ़ से ख़ुद ही मिल जायेगी।

आज़ाद मुसलमान?

अबुल अब्बास ख़ाँ

तन्हाई में बैठा वो शख़्स माज़ी की यादों में खोया हुआ था। उसकी निगाहों के सामने किसी फ़िल्म की तरह आज़ादी का मन्ज़र घूम रहा था। अपने हाफ़िज़ें पर उसने ज़ोर देते हुए आज़ादी के नारों को सुनने की कोशिश की "इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद" के नारों से हिन्दुस्तान का कूचा–कूचा गूंज रहा था। क्या हिन्दु क्या मुसलमान हर किसी के लबों पर एक धुन व एक ही आहंग और यही एक तराना था। आंखों में उम्मीद की चमक और दिलमें जोश मारते जज़्बात थै। जिन्दगी का सिर्फ़ एक ही मक़सद था "फ़िरन्गियों से आज़ादी!" खून की नदियां बहती हैं तो बहें, औरतें बेवा और बच्चे यतीम होते हैं तो हुआ करें, आज़ादी–ए–हिन्द की ख़ातिर सारी कुर्बानियां हैच हैं।

ये वो जज़्बात हैं जो लगभग आज़ादी के हर मुजाहिद के दिल में थे। क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम! सब एक सफ़ में। अगर गांधी जी, जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, भगत सिंह इत्यादि थे तो दूसरी तरफ़ जाफ़र थानेसरी रह0, मौलाना यहया रह0, हसरत मोहानी रह0, मौलाना आज़ाद और अली बिरादरान इत्यादि दिलों में आज़ादी के वलवले थे तो निगाहों में आज़ादी की चमक! ऐसा दिन ज़रूर आयेगा जब हमारा मुल्क आज़ाद होगा। ये मुल्क सिर्फ़ हिन्दुस्तानियों का होगा। भाईचारा व मुहब्बत व मानवता के नग़मों से यहां की फ़िज़ा गूंज उठेगी। न मस्जिदों पर आंच आयेगी न मन्दिरों पर ज़रब लगेगी। हर किसी को मज़हब की पूरी आज़ादी हासिल होगी। इसी तरह के ख़्यालात शायद आज़ाादी के हर मुजाहिद के दिल में थे। कितने उनके ख़्यालात और जज़्बात!!

उसके दिल व दिमाग़ पर यही बातें छायी हुईं थी। हिन्द की आज़ादी के इतिहास के उतार व चढ़ाव उसकी निगाहों के सामने घूम रहे थे कि अचानक एक ज़ोरदार चीख़ ने उसे चौंका दिया, पलट कर देखा तो माथे पर तिलक लगाये, हाथ में चकमता छूरा लिये एक शख़्स खड़ा था और उसके क़दमों पर तड़पता हुआ इब्ने आदम। कुछ ही देर में पूरे माहौल में सन्नाटा, और तड़पता हुआ वो आदमज़ात। धीरे–धीरे हिम्मत करके कुछ लोग उसके पास पहुंचे। ज़मीन पर पड़ा हुआ बूढ़ा व कमज़ोर आदमी, चेहरे पर चमकती हुई लम्बी सफ़ेद दाढ़ी, किसी ने बढ़ कर पूछा किइस बूढ़े को किसने मारा। एक लम्बी ख़ामोशी थी। आख़िर कार उस बूढे ने ही हिम्मत की अपने को संभालते हुए लबों को हरकत दी कि मैं एक मुसलमान हूं। दूर एक बस्ती में अपनी बीवी और लड़कियों के साथ रहता हूं। अचानक कुछ लोग मेरे घर में घुस आये। ख़ाकी नेकर, माथे पर पीली पट्टी जिस पर श्रीराम लिखा हुआ था, किसी के हाथ में त्रिशूल, भाला और छूरा और किसी के हाथ में नंगी तलवार थी। एक ने मुझे दबोच लिया। फिर मेरी बीवी और बेटियों पर टूट पड़े मैंने विरोध करना चाहा तो मुझे बुरी तरह दबोच लिया। मेरी एक बेटी पेट से थी। उन लोगों ने उन दोनों की इज़्ज़त लूटी। और फिर तलवार की तेज़ धार दोनों के पेट पर पड़ी फिर उन्होंने घर को जलाना शुरू किया। ये सारी हरकतें मेरे सामने करते रहे और कहते रहे कि अपने अल्लाह और मुहम्मद स0अ0 को बुला। ये सिर्फ़ हिन्दु राष्ट्र है। यहां मुसलमानों का कोई ठिकाना नहीं। तुम्हें इस देश से निकाल कर रहेंगे। या किसी तरह तुम्हारा सफ़ाया कर देंगे। किसी तरह मेरी पकड़ ढ़ीली पड़ी और मैं वहां से भाग निकला और मेरी बीवी.....

इस बूढे की रूह परवाज़ कर चुकी थी। ये हौलनाक मन्ज़र देखकर उस मुजाहिद का जिस्म कांप उठा। नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मुसलमानों को ख़त्म नहीं करना चाहिये। मुसलमानों का इस मुल्क में पूरा हिस्सा है। आज़ादी की पूरी लड़ाई में वो बराबर शरीक रहे हैं। उन पर जुल्म नहीं हो सकता है। वो आज़ाद हैं। मैं भी मुसलमान हूं। मैं भी आज़ाद हूं। आज़ाद हिन्दुस्तान का आज़ाद मुसलमान!!

ठसी तरह के ख़्यालात से लड़ता और घबराया हुआ तेज़ी से अपनी बस्ती की तरफ़ जा रहा था और बार बार दिल को समझा रहा था कि ऐसा नहीं हो सकता मुसलमान आज़ाद हैं लेकिन अचानक ही उसके क़दम रुक गये। ये क्या?मेरे गांव में ये आग कैसी लगी है?वो तो मेरा घर है वो कैसे जल गया?ये चीख़ व पुकार कैसी? और उसने वहीं से दौड़ लगायी और फिर एक ज़ोरदार चीख़ के बाद पूरी फ़िज़ाम ें सन्नाटा था। एक गहरा सन्नाटा लेकिन.....सवाल बदस्तूर क़ायम था..... क्या मुसलमान आज़ाद हैं?!!

एक हिदायत का परवाना एक शिफ़ा का नुस्ख़ा

कुरआन शरीफ़ जहां एक हिदायत का परवाना है वहीं एक शिफ़ा का नुस्ख़ा भी है। हर मर्ज़ की दवा, उससे ज़बान को लज़्ज़त, दिल को सुकून, दिमाग़ को ताज़गी, ज़िन्दगी को बरकत, बदन को हर तकलीफ़ व मुसीबत से हिफ़ाज़त मिलती है। कुरआन शरीफ़ की शुरूआत इस आयत से होती है:

"ये किताब है, इसमें कोई शक नहीं। मुत्तक़ियों के लिये हिदायत है।"

"और हम नाज़िल करते हैं कुरआन शरीफ़ से वो चीज़ें जो शिफ़ा और रहमत हैं मोमिनों के लिये।"

"ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक ऐसी चीज़ आयी है (जो बुरे कामों से रोकने के लिये) नसीहत है और दिलों में जो (बुरे कामों से) रोग हो जाते हैं उनके लिये शिफ़ा है और रहमत है और ये सब बरकत ईमान वालों के लिये है।"

आप स०अ० और सहाबा किराम रज़ि० से साबित है कि वो अल्लाह के कलाम को इबरत की ख़ातिर भी पढ़ते थे और उसको शिफ़ा का नुस्ख़ा समझकर बीमारियों और मुसीबतों के वक़्त भी तिलावत करते थे और क्यों न हो जबकि अल्लाह ने माद्दी चीज़ों, मिट्टी, पानी, जड़ी, बूटियों में शिफ़ा रखी है तो सबसे बढ़कर अपने कलाम में शिफ़ा रखी है।

मौलाना मुहमद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME-06

MAY 2014

ISSUE-05

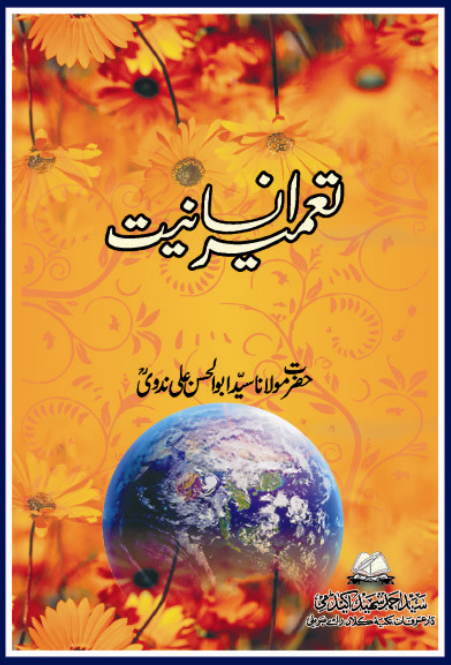

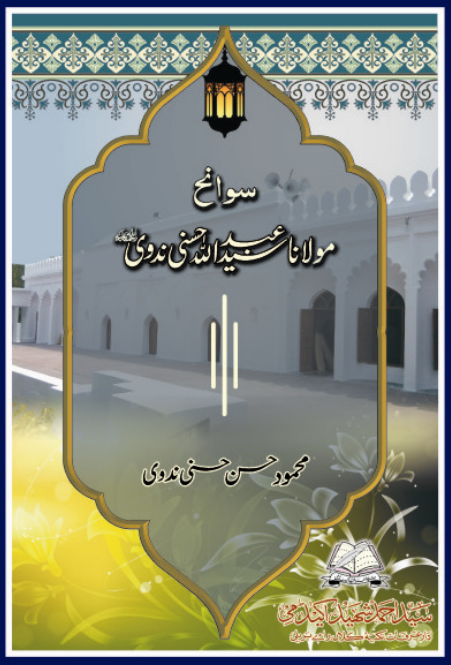

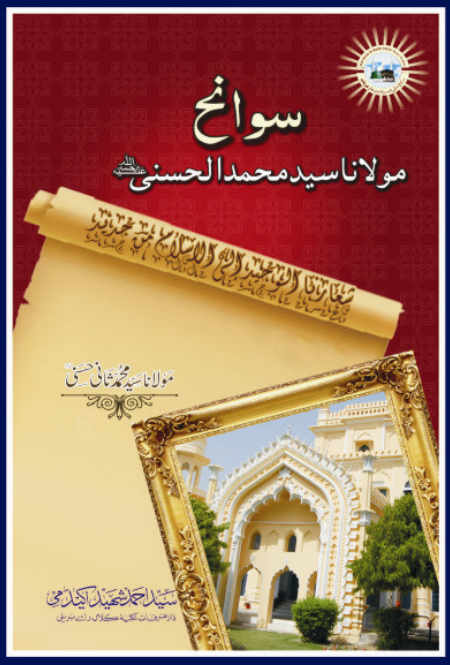

Sayyid Ahmad Shaheed Academy (Contact: 9919331295)

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.